तापमान
अधिकतम 32.0 डिग्री से.
न्यूनतम 21.4 डिग्री से.

हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 14 जून 2026

11 नीट परीक्षा 21 को, प्रशासन ने शुरू की तैयारियां, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं पर रहेगा प्रतिबंध

12 कॉलेजों में स्नातक कोर्सो में आवेदन के दो दिन शेष, 27 को आउट होगी पहली मेरिट लिस्ट

खबर संक्षेप

सट्टा खाईवाली करता एक आरोपी काबू

रेवाड़ी। माडल टाउन थाना पुलिस ने सट्टा खाईवाली करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि मोहल्ला बास सिताबराय निवासी मुकेश सार्वजनिक स्थान पर सट्टा खाईवाली कर रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने बोगस ग्राहक बनाकर उसके पास भेजा। सट्टे का नंबर लगाते ही आरोपी को पुलिस ने काबू कर लिया। उसके कब्जे से सट्टे की 1640 रुपये राशि और पर्चियां बरामद हुइं। आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद उसके खिलाफ गैंबलिंग एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया।

हादसों के आरोपी वाहन चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों को अंजाम देने के बाद फरार हुए दो वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। थाना कसोला पुलिस ने 8 जून को दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर हुए हादसे के बाद दर्ज मामले में राजस्थान के आंगवा गांव निवासी नेमाराम को गिरफ्तार किया है। बावल थाना पुलिस ने 11 जून को हुए हादसे में आरोपी चालक राजस्थान के भोपिया निवासी नरेश को गिरफ्तार किया है। दोनों हादसों में दो लोगों की मौत हो गई थी।

वरिष्ठ नागरिक दिवस पर कार्यक्रम 15 को

रेवाड़ी। वरिष्ठ नागरिक कल्याण संगठन एवं लोक जन सेवा मंच की ओर से 15 जून को सुबह 11 बजे हरिओम अग्रसेन लैब में वरिष्ठ नागरिक दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में सीजेएम डा. रेनु सोलखो मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करेंगी।

पेट्रोल पंप से लेकर मकान और दुकान तुड़वाए, अनाधिकृत रूप से किए गए निर्माण धराशाही

एनएचएआई का अतिक्रमण पर हथौड़ा जैसलमेर हाईवे से हटवाए पुख्ता निर्माण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

एनएचएआई की ओर से जैसलमेर नेशनल हाईवे पर पाली से लेकर माजरा में निर्माणाधीन एम्स तक किए गए अतिक्रमण को ध्वस्त करा दिया गया। इस कार्रवाई में एक पेट्रोल पंप और पांच मकान और कई दुकानों को जेसीबी मशीन से धराशाही कर दिया गया। पुलिस बल की मौजूदगी के कारण इस कार्रवाई का विरोध अपना काम नहीं कर सका। एक पेट्रोल पंप मालिक ने एनएचएआई की इस कार्रवाई को पूरी तरह गलत बताया, लेकिन एनएचआई की ओर से पेट्रोल पंप संचालक के पास प्राधिकरण की एनओसी नहीं होने की बात कही गई है। माजरा में निर्माणाधीन एम्स को बिजली आपूर्ति करने के लिए एचवीपीएन की ओर से 33 केवी क्षमता की लाइन बिछानी है। इसके लिए निगम ने एनएचएआई से उसकी जमीन का इस्तेमाल करने की अनुमति मांगी थी। एनएचएआई की जमीन पर बड़ी संख्या में लोगों ने कब्जे किए हुए हैं। इनमें पक्के निर्माण के साथ-साथ सड़क किनारे खोखे और टिनशेड तक शामिल हैं। एनएचएआई ने अपनी जमीन खाली कराने के लिए फिलहाल पाली से लेकर एम्स तक की जमीन पर अतिक्रमण करने वाले लोगों को नोटिस जारी किए थे। इसके बाद भी जब कब्जे नहीं हटाए गए, तो एनएचएआई की ओर से अपनी जमीन मुक्त कराने के लिए बड़ा एक्शन लेना पड़ा। बीडीपीओ खोल संदीप कुमार को ड्यूटी मजिस्ट्रेट बनाया गया था। कार्रवाई को अंजाम देने के लिए एसआई सुरेंद्र के नेतृत्व में भारी पुलिस मौजूद रहा। इसके बाद टीम ने जेसीबी मशीन और क्रेन की मदद से अपनी जमीन को खाली करा लिया। इस कार्रवाई के दौरान प्राधिकरण की जमीन पर खोखा लगाकर दुकान चलाने वाले कई लोगों ने खुद ही अपने खोखे व टिनशेड हटा लिए। जिन्होंने नहीं हटाए, उनके खोखे और टिनशेड एनएचएआई की टीम ने हटवा दिए।

रेवाड़ी। जैसलमेर हाईवे से पेट्रोल पंप का अतिक्रमण तोड़ती टीम, रेवाड़ी-जैसलमेर हाईवे से अतिक्रमण हटवाती एनएचएआई की टीम। फोटो : हरिभूमि

पेट्रोल पंप संचालक ने बताया मनमानी

पाली के पास बने पेट्रोल पंप के एक हिस्से को जेसीबी से तुड़वाने पर संचालक ने जगदीश ने कार्रवाई को अनुचित करार देते हुआ बताया कि पेट्रोल पंप की जमीन का अधिग्रहण करते हुए भूमालिक को कृषि भूमि का मुआवजा दिया गया था। उसने आर्बिटेटर के समक्ष अपील दायर की हुई है, लेकिन फैसला आने से पहले ही एनएचआईए ने तोड़फोड़ की कार्रवाई की है, जो पूरी तरह गलत है। उसकी व्यावसायिक जमीन का कृषि भूमि मानकर ही मुआवजा निर्धारित किया गया था।

एनएचएआई से नहीं ली गई एनओसी

पेट्रोल पंप संचालक के आरोपों को बेबुनियाद करार देते हुए रेजिडेंट इंजीनियर परियोजना बसंत यादव ने स्पष्ट किया कि इस सड़क को एनएचएआई ने वर्ष 2019 में पीडब्ल्यूडी से टेकओवर किया था। नियमानुसार एक साल के अंदर एनएचएआई से एनओसी लेनी होती है, लेकिन पंप संचालक ने एनओसी नहीं ली। उसने सीएलयू के लिए आवेदन किया हुआ था, लेकिन सीएलयू अपूल्ड नहीं हुई थी। एसके पास जो एनओसी है, वह पीडब्ल्यूडी की प्रोविजनल एनओसी ही है।

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा अतिक्रमण

एनएचएआई की जमीन पर अतिक्रमण से एक ओर जहां हादसों की आशंका बढ़ जाती है, तो दूसरी ओर यातायात के सुगम संचालन में बाधा आती है। प्राधिकरण की जमीन पर अतिक्रमण किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अतिक्रमण हटाने के लिए जल्द ही बड़े स्तर पर कार्रवाई शुरू की जाएगी। -बसंत यादव, रेजिडेंट इंजीनियर, प्लानिंग।

आगे बड़ी कार्रवाई की रूपरेखा तैयार

एनएचएआई की ओर से जैसलमेर नेशनल हाईवे के दोनों ओर अपनी जमीन से अतिक्रमण हटवाने के लिए बड़ी कार्रवाई करने की रूपरेखा तैयार की जा रही है। बड़ी संख्या में लोगों ने सड़क के दोनों ओर प्राधिकरण की जमीन पर स्थाई और अस्थाई अतिक्रमण किए हुए हैं। अतिक्रमण के चलते सर्विस रोड पर हादसों की आशंका बनी रहती है। होटल व ढाबों के पास वाहन खड़े होते हैं, जो हादसों का कारण बन सकते हैं। इन अतिक्रमणों को हटवाने के लिए जल्दी ही कार्रवाई की जाएगी।

यह रहे कार्रवाई के दौरान मौजूद

एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर के निर्देश पर हुई कार्रवाई को अंजाम देते समय बसंत कुमार के साथ हरियाणा हैम परियोजनाओं के ग्रुप जीएम वैभव शर्मा, इंजीनियर मोहित शर्मा, इंजीनियर राहुल, मैनेजर सुनील, रोड लिंक से प्रोजेक्ट मैनेजर धर्मेंद्र चौधरी, पेट्रोलिंग टीम के सदस्य, कंट्रोल रूम अधिकारी कालूराम, पंकज व अनीश सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे। आगामी दिनों में इसी तरह की कार्रवाई को दोहराया जा सकता है।

देशी पिस्तौल के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सीआईए रेवाड़ी ने अवैध हथियार रखने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस ने राजस्थान के जिला भीलवाडा के शाहपुरा के मोहल्ला गाछा बस्ती हाल आबाद नजदीक सुगली माता मंदिर निवासी शिवराज उर्फ शिवा व मोहल्ला गुर्जरवाडा निवासी सतीश को काबू किया है।

सीआईए को सूचना मिली थी कि राजस्थान के शाहपुरा निवासी शिवराज उर्फ शिवा सुगली माता मंदिर के पास रह रहा है। वह अपने पास अवैध हथियार रखता है। आरोपी हथियार लेकर किसी के आने का इंतजार कर रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस बताए गए स्थान पर पहुंच गई। वहां खड़े एक शख्स ने पुलिस को देखकर भागने का प्रयास किया। पीछा करते हुए पुलिस ने उसे काबू कर लिया। तलाशी लेने पर आरोपी के कब्जे से देशी पिस्तौल बरामद हुआ। पूछताछ में आरोपी शिवराज ने बताया कि उसे अवैध हथियार सतीश ने उपलब्ध कराया था। सीआईए ने रामपुरा थाने में दोनों आरोपियों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज कराया है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

रेवाड़ी। सीआईए की गिरफ्त में दो आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कंपनी में करंट लगने से तीन कर्मचारी झुलसे, एक गंभीर

धारूहेड़ा। जोनियावास में दवा बनाने वाली कंपनी में शुक्रवार की रात मीटर में वोल्टेज चेक करते समय करंट की चपेट में आने से तीन कर्मचारी झुलस गए। तीनों को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां एक ही हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। रात को ड्यूटी के दौरान बिजली की वोल्टेज कम होने के कारण कंपनी में इलेक्ट्रिशियन के पद पर कार्यरत श्रीराम मीटर चेक कर रहा था। कंपनी के कर्मचारी राजेंद्र पाल व पंकज उसकी मदद कर रहे थे। इसी दौरान मीटर में शॉर्ट सर्किट से धमाका हो गया, जिससे तीनों कर्मचारी झुलस गए। कंपनी प्रबंधन की ओर से तीनों को राजस्थान के भिवाड़ी के प्राइवेट अस्पताल पहुंचाया, जहां से दो को दिल्ली सफदरजंग के लिए रेफर कर दिया गया। राजेंद्र पाल को प्राइवेट अस्पताल से उपचार के बाद घर भेज दिया गया, जबकि पंकज को सफदरजंग में उपचार के बाद छुट्टी दी गई। श्रीराम की गंभीर हालत को देखते हुए उसका उपचार किया जा रहा है। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने करंट लगने के कारणों की जांच शुरू कर दी।

महंगाई व टैक्स के दौर में

एफडी क्या सचमुच बढ़ा रही है बचत

तैयारी
बिजनेस डेस्क

खास बातें

1. 5 प्रतिशत महंगाई के बीच एफडी कैसे बन रहा है सीमित कमाई का साधन
2. विशेषज्ञों ने दी निवेश की रणनीति बदलने की सलाह
3. सुरक्षित निवेश तो है, लेकिन लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण के लिए अकेली एफडी काफी नहीं

फिक्स्ड डिपॉजिट आज भी पूंजी की सुरक्षा और स्थिर आय के लिए एक मजबूत विकल्प है, लेकिन केवल एफडी के भरोसे लंबी अवधि में बड़ी संपत्ति बनाना आसान नहीं है। महंगाई और टैक्स मिलकर इसके वास्तविक रिटर्न को काफी कम कर सकते हैं। इसलिए निवेशकों को अपनी जरूरत, लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार एफडी के साथ अन्य निवेश विकल्पों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। आखिरकार निवेश की असली सफलता बैंक बैलेंस बढ़ने में नहीं, बल्कि समय के साथ आपकी क्रय शक्ति बढ़ने में छिपी होती है।

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) को लंबे समय से सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का प्रतीक माना जाता रहा है। निश्चित ब्याज, पूंजी की सुरक्षा और आसान प्रक्रिया के कारण लाखों निवेशक अपनी बचत एफडी में लगाते हैं। लेकिन बदलते आर्थिक माहौल में केवल ब्याज दर को देखकर निवेश का आकलन करना पर्याप्त नहीं रह गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी निवेश की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि वह महंगाई और करों का असर झेलने के बाद निवेशक की क्रय शक्ति को कितना बढ़ा पाता है। यदि एफडी पर मिलने वाला रिटर्न महंगाई दर के बराबर या उससे कम है, तो खाते में रकम बढ़ने के बावजूद वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है। खासकर उच्च आयकर स्लैब वाले निवेशकों के लिए टैक्स कटने के बाद एफडी का रिटर्न और कम हो जाता है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या एफडी केवल धन सुरक्षित रखने का साधन है या फिर वास्तव में संपत्ति निर्माण का भी प्रभावी माध्यम है।

पूंजी सुरक्षा के लिए बेहतर, लेकिन वेल्थ क्रिएशन के लिए जरूरी है विविध निवेश रणनीति

महंगाई क्यों कम कर देती है

- मान लीजिए किसी निवेशक को एफडी पर 6 प्रतिशत ब्याज मिलता है और उसी अवधि में महंगाई दर 5 प्रतिशत रहती है। ऐसे में निवेशक का वास्तविक लाभ केवल 1 प्रतिशत के आसपास रह जाता है।
- वित्तीय सलाहकार इसी कारण ₹रियल रिटर्न₹ पर जोर देते हैं। रियल रिटर्न का अर्थ है निवेश से मिलने वाला वास्तविक लाभ, जो महंगाई घटाने के बाद बचता है।
- रियल रिटर्न = निवेश पर रिटर्न – महंगाई दर
- यदि एफडी का ब्याज 4.9 प्रतिशत और महंगाई 5 प्रतिशत है, तो निवेशक की क्रय शक्ति बढ़ने के बजाय घट भी सकती है।

एसबीआई की एफडी दरें क्या बताती हैं?

- 5 प्रतिशत महंगाई को आधार मानें तो छह महीने तक की छोटी अवधि वाली कई एफडी योजनाएं महंगाई को मात देने में संघर्ष करती दिखाई देती हैं। इन पर मिलने वाला ब्याज 3.05 प्रतिशत से 4.9 प्रतिशत के बीच है।
- हालांकि 1 से 3 वर्ष की अवधि वाली एफडी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। इस अवधि में एसबीआई करीब 6.25 से 6.4 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है, जिससे वास्तविक रिटर्न लगभग 1.25 से 1.4 प्रतिशत तक पहुंचता है। दिलचस्प बात यह है कि 5 से 10 वर्ष तक की लंबी अवधि की एफडी में भी महंगाई के बाद वास्तविक लाभ बहुत अधिक नहीं बढ़ता। यानी केवल लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से बड़ा लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।

टैक्स के बाद और घट जाता है रिटर्न

महंगाई के अलावा टैक्स भी एफडी निवेशकों की कमाई को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 6.4 प्रतिशत ब्याज वाली एफडी पर।

- शून्य टैक्स स्लैब में रिटर्नः 6.4%
- 20% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 5.12%
- 30% टैक्स स्लैब में रिटर्नः 4.48%
- यानी 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले निवेशक के लिए 6.4 प्रतिशत का ब्याज प्रभावी रूप से 4.48 प्रतिशत रह जाता है, जो 5 प्रतिशत महंगाई से भी कम है। ऐसे में वास्तविक रिटर्न नकारात्मक हो सकता है।

लिक्विड फंड बन सकते हैं विकल्प

कम अवधि के निवेश के लिए लिक्विड फंड भी निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, एक प्रमुख लिक्विड फंड ने पिछले एक वर्ष में 6.29 प्रतिशत रिटर्न दिया, जो अधिकांश एफडी योजनाओं के बराबर या उनसे बेहतर रहा। हालांकि एफडी की तरह लिक्विड फंड में रिटर्न की गारंटी नहीं होती। ये बाजार से जुड़े होते हैं और समय के साथ इनमें उतार-चढ़ाव संभव है।

फिर भी एफडी क्यों है पसंदीदा?

एफडी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसकी सुरक्षा और निश्चितता है। निवेशक को पहले से पता होता है कि उसे कब और कितना पैसा मिलेगा। एफडी विशेष रूप से इन लोगों के लिए उपयुक्त मानी जाती हैः

- सेवानिवृत्त व्यक्ति
- आपातकालीन फंड रखने वाले निवेशक
- 1 से 3 वर्ष के लक्ष्यों के लिए बचत करने वाले लोग
- कम जोखिम पसंद करने वाले निवेशक

कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

- बेहतर महंगाई-समायोजित रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशक अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार निम्न विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। ■ लिक्विड फंड
- मनी मार्केट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड
- आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग्स बॉन्ड
- लंबी अवधि के लिए इक्विटी म्यूचुअल फंड

हर महिला को जरूर अपनानी चाहिए ये 5 वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स

बिजनेस डेस्क

आज की महिलाएं सिर्फ परिवार और करियर की जिम्मेदारियां ही नहीं निभा रहीं, बल्कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। बदलते दौर में वित्तीय सुरक्षा और संपत्ति निर्माण महिलाओं की प्राथमिकताओं में शामिल हो चुका है। हालांकि, कई महिलाएं अभी भी निवेश, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पातीं, जिससे भविष्य में आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि सही वित्तीय योजना और अनुशासित निवेश के जरिए महिलाएं न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित बना सकती हैं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए मजबूत आर्थिक आधार भी तैयार कर सकती हैं। नियमित निवेश, आपातकालीन फंड, पर्याप्त बीमा और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी जैसे कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। आइए जानते हैं ऐसी पांच महत्वपूर्ण वेल्थ मैनेजमेंट टिप्स, जिन्हें अपनाकर महिलाएं अपने भविष्य को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बना सकती हैं।

निवेश को करें ऑटोमेटिक

नियमित निवेश की आदत बनाने का सबसे आसान तरीका है निवेश को ऑटोमेट करना। इसके लिए सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) या फिर आरडी में निवेश कर सकते हैं और हर महीने नियमित निवेश कर सकते हैं। ऑटोमैटिक निवेश की सुविधा से करियर में बदलाव या आय में उतार-चढ़ाव के दौरान भी निवेश जारी रहता है। इससे समय के साथ कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है और बिना ज्यादा निगरानी के अच्छी संपत्ति बनाई जा सकती है।

रिटायरमेंट के लिए अलग फंड बनाएं

रिटायरमेंट प्लानिंग को टालना भविष्य में आर्थिक परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसे में करियर की शुरुआत से ही आय का एक हिस्सा रिटायरमेंट फंड के लिए अलग रखना चाहिए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी खर्च और अन्य दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए भी अलग निवेश योजना बनाना फायदेमंद रहता है। समय-समय पर इन निवेशों की समीक्षा करना भी जरूरी है।

अपने फैसले खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

वित्तीय फैसलों की जिम्मेदारी खुद लें

आर्थिक आत्मनिर्भरता का मतलब सिर्फ कमाई करना नहीं, बल्कि अपने पैसों से जुड़े फैसले खुद लेना भी है। महिलाओं को निवेश, बचत, बीमा और टैक्स प्लानिंग जैसे विषयों की बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए। जब आप अपने वित्तीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो आत्मविश्वास बढ़ता है और महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भरता कम होती है।

मजबूत इमरजेंसी फंड तैयार करें

जीवन में कब कौन सी चुनौती सामने आ जाए, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। नौकरी छूटना, स्वास्थ्य संबंधी समस्या या कोई अन्य अप्रत्याशित खर्च आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा कवरेज ही काम आता है।

ईपीएफ का छिपा फायदा

8.25% ब्याज, लेकिन असली रिटर्न 11.8%

विशेषज्ञों का मानना है कि ईपीएफ केवल बचत का माध्यम नहीं, बल्कि रिटायरमेंट योजना की रीढ़ है। नियमित योगदान, चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ, कर छूट और सरकारी निगरानी इसे एक भरोसेमंद निवेश बनाती है। यदि कर्मचारी नौकरी के शुरुआती वर्षों से ही ईपीएफ को गंभीरता से लें और बीच में निकासी से बचें, तो रिटायरमेंट तक एक बड़ा कोष तैयार किया जा सकता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

भारत में नौकरीपेशा लोगों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) लंबे समय से रिटायरमेंट बचत का एक भरोसेमंद माध्यम रहा है। हर महीने वेतन से कटने वाली राशि और उस पर मिलने वाला ब्याज कर्मचारियों को भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि कई लोग ईपीएफ को केवल एक अनिवार्य बचत योजना मानते हैं और इसकी तुलना म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों से करते हुए इसे कम रिटर्न वाला निवेश समझ बैठते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ईपीएफ की वास्तविक ताकत केवल इसकी घोषित ब्याज दर में नहीं, बल्कि इसके साथ मिलने वाले कर लाभ और पूंजी सुरक्षा में छिपी है। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत की दर से ब्याज मिल रहा है। पहली नजर में यह रिटर्न सामान्य लग सकता है, लेकिन यदि कर लाभों को भी जोड़कर देखा जाए तो पुराने टैक्स रिजीम में 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले कर्मचारियों के लिए इसका प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार ईपीएफ को नौकरीपेशा लोगों के लिए सबसे मजबूत और सुरक्षित रिटायरमेंट निवेश विकल्पों में गिनते हैं।

टैक्स छूट, टैक्स-फ्री ब्याज और सुरक्षित निवेश का लाभ

आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत उसे लगभग 30 हजार रुपये तक की टैक्स बचत मिल सकती है। इसका मतलब यह हुआ कि कर्मचारी की जेब से वास्तविक रूप से केवल 70 हजार रुपये का खर्च हुआ, लेकिन ब्याज पूरे 1 लाख रुपये पर मिलेगा। 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर के हिसाब से एक वर्ष में 8,250 रुपये का ब्याज प्राप्त होगा। यदि इस ब्याज को वास्तविक निवेश यानी 70 हजार रुपये के अनुपात में देखा जाए तो प्रभावी रिटर्न लगभग 11.8 प्रतिशत के बराबर बैठता है। यही वह गणित है जिसे कई कर्मचारी नजरअंदाज कर देते हैं और केवल घोषित ब्याज दर देखकर ईपीएफ के वास्तविक लाभ का आकलन नहीं कर पाते।

ईपीएफ की बड़ी ताकत है ईपीएफ टैक्स सुविधा

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार EPF की सबसे बड़ी विशेषता इसका ईईई टैक्स ढांचा है। भारत में बहुत कम निवेश विकल्प ऐसे हैं जो यह तीनहरा लाभ प्रदान करते हैं। पहला लाभ निवेश के समय मिलता है। कर्मचारी द्वारा ईपीएफ में जमा की गई राशि पर धारा 80सी के तहत कर छूट का दावा किया जा सकता है। दूसरा लाभ निवेश अवधि के दौरान मिलता है। ईपीएफ खाते में जमा राशि पर मिलने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। तीसरा लाभ निकासी के समय मिलता है। यदि कर्मचारी ने पांच वर्ष या उससे अधिक समय तक लगातार सेवा की है, तो ईपीएफ से निकाली गई राशि भी कर मुक्त रहती है। यानी निवेश से लेकर निकासी तक तीनों चरणों में कर राहत मिलती है। यही वजह है कि ईपीएफ को कर-कुशल निवेश विकल्प माना जाता है।

कैसे बढ़ जाता है ईपीएफ का वास्तविक रिटर्न?

अधिकांश निवेशक किसी भी योजना का मूल्यांकन केवल उस पर मिलने वाले ब्याज या रिटर्न के आधार पर करते हैं। लेकिन ईपीएफ के मामले में यह तरीका पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। इसकी वजह यह है कि ईपीएफ निवेश पर कर छूट का अतिरिक्त लाभ मिलता है। मान लीजिए कोई कर्मचारी एक वर्ष में ईपीएफ में 1 लाख रुपये का योगदान करता है। यदि वह पुराने टैक्स रिजीम में है और 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब के अंतर्गत आता है, तो

नए टैक्स रिजीम में भी बना हुआ है आकर्षण

सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम में धारा 80सी के तहत मिलने वाली अधिकांश कर छूट समाप्त कर दी गई है। ऐसे में कुछ लोगों को लगता है कि ईपीएफ का महत्व कम हो गया है। हालांकि ऐसा पूरी तरह सही नहीं है। भले ही नए टैक्स रिजीम में ईपीएफ योगदान पर कर छूट न मिले, लेकिन खाते में मिलने वाला ब्याज अभी भी कर मुक्त रहता है और निर्धारित शर्तों के तहत निकासी पर भी टैक्स नहीं लगता। इसलिए यह योजना आज भी रिटायरमेंट बचत के लिए एक आकर्षक विकल्प बनी हुई है। हालांकि वर्तमान नियमों के अनुसार कर्मचारी के 2.5 लाख रुपये से अधिक वार्षिक योगदान पर मिलने वाले अतिरिक्त ब्याज के एक हिस्से पर कर लगाया जा सकता है। यह प्रावधान मुख्य रूप से उच्च आय वाले कर्मचारियों पर लागू होता है।

सही होम लोन के चुनाव से मिलेगा बड़ा फायदा

मोरेटोरियम, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन व बैलून पेमेंट से अति. लाभ | होम लोन का चयन करने से पहले विकल्पों को अच्छी तरह समझें

बिजनेस डेस्क

आज के समय में अपना घर खरीदना अधिकांश लोगों का सपना होता है, लेकिन लगातार बढ़ती प्रॉपर्टी कीमतों के कारण यह सपना पूरा करना आसान नहीं रह गया है। ऐसे में होम लोन लाखों लोगों के लिए घर खरीदने का सबसे बड़ा सहारा बनता है। हालांकि होम लोन लेते समय अधिकांश लोग केवल ब्याज दर और ईएमआई पर ध्यान देते हैं, जबकि बैंक और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार कई तरह के लोन विकल्प भी उपलब्ध कराती हैं। इन विकल्पों में मोरेटोरियम लोन, नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम और बैलून पेमेंट लोन प्रमुख हैं। प्रत्येक योजना की अपनी विशेषताएं, फायदे और कुछ सीमाएं हैं। इसलिए किसी भी होम लोन का चयन करने से पहले इन विकल्पों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

मोरेटोरियम लोन देता है राहत

मोरेटोरियम लोन उन लोगों के लिए उपयोगी माना जाता है जो कुछ समय के लिए आर्थिक दबाव का सामना कर रहे हों या भविष्य में उनकी आय बढ़ने की संभावना हो। इस योजना में उधारकर्ता को एक निश्चित अवधि तक नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। हालांकि यह सुविधा पूरी तरह मुफ्त नहीं होती। मोरेटोरियम अवधि के दौरान भी लोन पर ब्याज लगातार जुड़ता रहता है। बाद में यह ब्याज मूल बकाया राशि में जोड़ दिया जाता है।

नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना

वर्तमान समय में बड़ी संख्या में लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में घर खरीदते हैं। ऐसे खरीदारों के लिए नो-ईएमआई-टिल-पजेशन स्कीम आकर्षक विकल्प हो सकती है। इस योजना में घर का कब्जा मिलने तक खरीदार को नियमित ईएमआई का भुगतान नहीं करना पड़ता। कई मामलों में बिल्डर इस अवधि के दौरान ब्याज या ईएमआई का खर्च वहन करता है। इससे खरीदार पर तत्काल वित्तीय बोझ कम हो जाता है। यह योजना विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद मानी जाती है जो वर्तमान में किराए के मकान में रह रहे हैं और साथ ही नया घर भी खरीद रहे हैं। इससे उन्हें एक साथ किराया और ईएमआई दोनों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस सुविधा की लागत अक्सर किसी न किसी रूप में प्रॉपर्टी की कीमत में शामिल हो सकती है। इसलिए ग्राहकों को योजना के सभी नियम और शर्तें ध्यान से पढ़नी चाहिए।

बैलून पेमेंट लोन बेहतर

बैलून पेमेंट लोन पारंपरिक होम लोन से थोड़ा अलग होता है। इसमें शुरुआती वर्षों के दौरान ईएमआई अपेक्षाकृत कम रखी जाती है, जिससे मासिक भुगतान का दबाव कम रहता है। लेकिन लोन की अवधि के अंतिम चरण में उधारकर्ता को एक बड़ी राशि एकमुश्त चुकानी होती है। इसी बड़े अंतिम भुगतान को बैलून पेमेंट कहा जाता है। यह विकल्प उन लोगों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें भविष्य में आय में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद हो। उदाहरण के लिए किसी कर्मचारी को बड़े बोनस, ईएसओपी (ईएसओपी) से लाभ या वेतन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी की संभावना हो। वहीं व्यवसायियों को भविष्य में किसी बड़े लाभ की उम्मीद हो सकती है। हालांकि यदि अनुमानित आय वृद्धि नहीं होती तो अंतिम भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए इस विकल्प को चुनते समय वित्तीय स्थिति का वास्तविक आकलन करना जरूरी है।

लोन लेते समय रखें ध्यान

होम लोन का कोई भी विशेष विकल्प चुनने से पहले केवल कम ईएमआई या शुरुआती राहत को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। यह समझना जरूरी है कि लंबे समय में कुल भुगतान कितना होगा और अतिरिक्त सुविधाओं की वास्तविक लागत क्या है। ग्राहकों को लोन की कुल अवधि, कुल ब्याज भुगतान, संभावित जोखिम और अपनी भविष्य की आय की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए। इसके अलावा सभी नियमों और शर्तों को विस्तार से पढ़ना भी जरूरी है।

जरूरत अनुसार चुनें सही विकल्प

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और जरूरत अलग होती है। इसलिए कोई भी एक लोन योजना सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। जहां मोरेटोरियम लोन अस्थायी राहत प्रदान करता है, वहीं नो-ईएमआई-टिल-पजेशन योजना निर्माणाधीन मकान खरीदने वालों के लिए फायदेमंद हो सकती है। दूसरी ओर बैलून पेमेंट लोन उन लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है जिन्हें भविष्य में अधिक आय की उम्मीद हो। विशेषज्ञों का मानना है कि सही जानकारी और सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के साथ चुना गया होम लोन न केवल घर खरीदने का सपना पूरा करता है, बल्कि लंबे समय तक वित्तीय संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है।

डबल इनकम, डबल सुरक्षा : नौकरीपेशा दंपतियों के लिए कुछ जरूरी वित्तीय नियम

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं तो सही बजट, नियमित संवाद जरूरी

बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है। नियमित स्वास्थ्य जांच, मेडिकल इमरजेंसी फंड और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा परिवार को अचानक आने वाले खर्चों से बचा सकते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा भी परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं, तो परिवार की आय बढ़ने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी बढ़ जाते हैं। घर खरीदने, बच्चों की शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और सुरक्षित रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्य अपेक्षाकृत आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि दोहरी आय के साथ वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। कई बार खर्च, बचत और निवेश को लेकर स्पष्ट योजना न होने से मतभेद और आर्थिक असंतुलन पैदा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि डबल इनकम वाले दंपतियों के लिए नियमित वित्तीय चर्चा, साझा बजट, व्यक्तिगत और संयुक्त खर्चों के बीच संतुलन, पर्याप्त बीमा और अनुशासित निवेश बेहद जरूरी हैं। यदि दोनों साथी मिलकर स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य तय करें और उनके अनुसार योजना बनाएं, तो न केवल वर्तमान जरूरतें बेहतर ढंग से पूरी की जा सकती हैं, बल्कि भविष्य की आर्थिक चुनौतियों का सामना भी आसानी से किया जा सकता है। छोटी-छोटी वित्तीय आदतें लंबे समय में बड़ी सफलता की नींव बनती हैं।

'मेरा, तुम्हारा और हमारा' फॉर्मूला अपनाएं

शादी के बाद भी आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व बना रहता है। इसके लिए आय को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक हिस्सा साझा खर्चों और पारिवारिक लक्ष्यों के लिए, जबकि बाकी दोनों पार्टनर के व्यक्तिगत खर्चों के लिए रखा जा सकता है। इससे जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच संतुलन बना रहता है।

पैसों को लेकर खुलकर करें बातचीत

अक्सर दंपति आय और खर्चों को लेकर नियमित चर्चा नहीं करते, जिससे कई बार गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर महीने एक तय समय पर बैठकर आय, खर्च, बचत और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करनी चाहिए। इससे वित्तीय फैसले पारदर्शी बनते हैं और आपसी विश्वास भी मजबूत होता है।

सही वित्तीय योजना से रख सकते हैं सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की मजबूत नींव

मिलकर बनाएं संतुलित बजट

दोनों की कुल आय को ध्यान में रखते हुए मासिक बजट तैयार करना जरूरी है। इसमें घर का किराया, राशन, बच्चों की जरूरतें, यात्रा और अन्य नियमित खर्चों के साथ भविष्य के लक्ष्यों के लिए भी राशि निर्धारित करनी चाहिए। एक व्यवस्थित बजट अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखने में मदद करता है।

बचत और निवेश को बनाएं आदत

दोहरी आय का सबसे बड़ा लाभ तभी मिलता है जब उसका एक हिस्सा नियमित रूप से बचत और निवेश में लगाया जाए। विशेषज्ञ कम से कम छह महीने के खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह देते हैं। इसके बाद जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार म्यूचुअल फंड, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में निवेश किया जा सकता है।

छोटी आदतें, बड़ा फायदा

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की छोटी और अनुशासित आदतों से हासिल होती है। नियमित संवाद, सही बजट, पर्याप्त सुरक्षा और व्यवस्थित निवेश के जरिए डबल इनकम वाले दंपति अपने सपनों को तेजी से पूरा कर सकते हैं और भविष्य को अधिक सुरक्षित बना सकते हैं।

खबर संक्षेप

संदिग्ध हालात में हुई व्यक्ति की मौत

रेवाड़ी। धवाना गांव में एक व्यक्ति की संदिग्ध हालात में मौत होने के बाद उसे ट्रांसफार्मर से करंट लगने से बदलने के लिए कुछ लोग शव उठाकर ट्रांसफार्मर के नीचे डालने के चले थे। इसी दौरान एक बिजलीकर्मी ने इसका वीडियो बना लिया, जिससे पूरा खेल बिगड़ गया। 10 जून की रात रघुबीर की संदिग्ध हालत में मौत हो गई थी। अगले दिन सुबह कुछ लोग शव लेकर बिजली ट्रांसफार्मर के नीचे डालने के लिए चल पड़े, ताकि मौत ट्रांसफार्मर के करंट से होने से निगम से मुआवजा वसूल सकें।

पौधों की देखभाल करना आवश्यकः संजीव कुमार

बावल। केंद्र सरकार के 12 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में बावल स्थित दमकल विभाग के कार्यालय में एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम संजीव कुमार ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि पौधे लगाकर उनकी देखभाल करना आवश्यक है। सभी लोग मानसून सीजन में अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनके पेड़ बनने तक सरंक्षण करें। मंडल अध्यक्ष रमेश झाबुआ ने कहा कि पेड़ हमारे जीवन का आधार है।

कार्यशाला में बीएलए 2 को दिया प्रशिक्षण

नांगल चौधरी। उपायुक्त अनुपमा अंजली के दिशा निर्देशानुसार पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 71 नांगल चौधरी विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के बीएलए 2 की वर्कशॉप का आयोजन किया गया। मास्टर ट्रैनर अंग्रेजी प्रवक्ता केसरी नन्दन ने बीएलए 2 को वर्कशॉप में बताया कि 15 जून से 14 जुलाई तक वे घर घर जाकर मतदाताओं को एन्यूमरेशन फॉर्म वितरित करेंगे। इसके अतिरिक्त निर्धारित कार्यक्रम के तहत 14 जुलाई को मतदान केंद्रों का रेशनलाइजेशन किया।

हरियाणा व्यापार मंडल कार्यकारिणी का विस्तार

नारनौल। हरियाणा व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष संदीप नूनीवाला ने मंडल के प्रदेश अध्यक्ष विजय लक्ष्मीचंद गुप्ता की अनुशंसा से व्यापार मंडल की कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए ओमप्रकाश लिसानियां को कनीना का प्रधान व सतीश गोयल को सतनाली का प्रधान मनोनीत किया है। गौरतलब है की हाल ही में जिला अध्यक्ष संदीप नूनीवाला की ओर से जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया था। संजय गर्ग को नारनौल शहरी प्रधान, रतनलाल को अटेली प्रधान, प्रहलाद पहलवान को नांगल चौधरी प्रधान व सुनील अग्रवाल को महेंद्रगढ़ का प्रधान मनोनीत किया।

जानलेवा हमला करने के मामले में आरोपित काबू

नारनौल। थाना शहर पुलिस ने नसीबपुर बस स्टैंड पर एक युवक पर हुए जानलेवा हमले के मामले में कार्रवाई करते हुए एक और आरोपित को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। जिसकी पहचान नांगतिहाड़ी निवासी योगेश के रूप में हुई है। आरोपित को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस इस मामले में पांच अन्य आरोपितों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

डीसी ने पारदर्शी परीक्षा संचालन को लेकर अधिकारियों को दिए निर्देश

नीट परीक्षा 21 को, प्रशासन ने कसी कमर, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं पर प्रतिबंध

अभ्यर्थियों के सुगम आवागमन और पुलिस बल की पर्याप्त तैनाती पर जांची व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। नीट परीक्षा को लेकर बैठक लेते डीसी अभिषेक मीणा। फोटो : हरिभूमि

राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी का पुनः आयोजन 21 जून को किया जाएगा। जिले में नीट परीक्षा को निष्पक्ष, पारदर्शी और सुचारू रूप से संचालन के लिए प्रशासन की ओर से तैयारियां शुरू कर दी गई है। डीसी अभिषेक मीणा ने शनिवार को लघु सचिवालय में एनटीए की ओर से आयोजित होने वाली नीट परीक्षा की तैयारियों को लेकर संबंधित विभागों के अधिकारियों को जरूरी दिशा निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि परीक्षा के सुरक्षित और पारदर्शी संचालन के लिए अधिकारी को बेहतर समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि परीक्षा प्रक्रिया की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए हर स्तर पर निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की जाए। बैठक से पूर्व मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी व राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी के महानिदेशक अभिषेक सिंह ने वीसी के माध्यम से प्रदेश के सभी उपायुक्तों के साथ परीक्षा के विभिन्न पहलुओं को लेकर चर्चा की।

- विश्वसनीयता के लिए हर स्तर पर निगरानी मजबूत

सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ करें कार्य

डीसी अभिषेक ने कहा कि अधिकारी समय-सीमा के भीतर सभी तैयारियां पूर्ण करने के साथ-साथ कंट्रोल रूम और आपातकालीन व्यवस्थाओं को सक्रिय रखे ताकि किसी भी अप्रत्याशित स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सकें। डीसी ने परीक्षा केंद्रों की तैयारी, केंद्रों में आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता, अभ्यर्थियों के सुगम आवागमन, ट्रैफिक मैनेजमेंट, पार्किंग व्यवस्था, पुलिस बल की पर्याप्त तैनाती और केंद्रों पर विशेष निगरानी रखने के लिए दिशा निर्देश दिए। उन्होंने परीक्षा के दौरान निर्बाध विद्युत आपूर्ति, पेयजल तथा बैठने की उचित व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि परीक्षा के दिन अभ्यर्थियों को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए और सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि परीक्षा से जुड़ी किसी भी तरह की अफवाहों व झूठ पर भी नजर रखी जाएगी। एसपी हेमेंद्र मीणा ने कहा कि नीट परीक्षा को लेकर सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के लिए पुख्ता व्यवस्था की जाएगी। उन्होंने पुलिस कर्मियों को परीक्षा केंद्रों के आसपास कड़ी निगरानी रखने और संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

इलेक्ट्रॉनिक व अन्य वस्तुओं पर रहेगा प्रतिबंध

परीक्षा केंद्र के अंदर मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, ईयरफोन, स्मार्ट वॉच, कैलकुलेटर, पेन ड्राइव जैसे सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। साथ ही ज्योमेट्री बॉक्स, प्लास्टिक पाउच, राइटिंग पैड, स्केल और इरेजर जैसी वस्तुएं भी ले जाने की अनुमति नहीं होगी। इसके अलावा वॉलेट, हैंडबैग, बेल्ट, टोपी या किसी भी प्रकार के धातु के आभूषण पहनकर परीक्षा केंद्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी। इस अवसर पर बावल के एसडीएम संजीव कुमार व शिक्षा विभाग से अशोक नामवाल सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

पीएम ने विकास व विरासत को दिया विशेष महत्वः यादव

रेवाड़ी। सचिवालय सभागार में आयोजित बैठक में मौजूद अतिथि व अधिकारी।

- केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में सचिवालय सभागार में बैठक का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शनिवार को लघु सचिवालय सभागार में बैठक का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में जिला परिषद चेयरमैन मनोज यादव और नगर परिषद चेयरपर्सन विनीता पीपल मौजूद रही। जिला उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त प्रीति चौधरी ने अतिथियों का अभिवादन किया। बैठक में जिला टैक्स बार एसोसिएशन और सीए एसोसिएशन के सदस्य भी मौजूद थे। जिला परिषद चेयरमैन मनोज यादव ने कहा कि यह सरकार के कार्यकाल का पड़ाव नहीं है, बल्कि भारत के विकास, सुशासन, आत्मविश्वास और वैश्विक प्रतिष्ठा की नई यात्रा के महत्वपूर्ण अध्याय है। इन 12 वर्षों में भारत ने संभावनाओं के देश से उपलब्धियों के देश तक की उल्लेखनीय यात्रा तय की है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विकास और विरासत दोनों को समान महत्व दिया है। आज 190 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में सरकार सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र के साथ विकसित भारत-2047 के विजन के साथ आगे बढ़ रही है। प्रदेश में भी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में समान रूप से विकास कार्य कराए जा रहे हैं।

दूसरा सबसे बड़ा करदाता जिला बना रेवाड़ी : प्रीति

उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त प्रीति चौधरी ने बताया कि 3271 करोड़ जीएसटी संग्रह के साथ रेवाड़ी, गुरुग्राम के बाद हरियाणा का दूसरा सबसे बड़ा करदाता जिला बना है। वहीं बावल आईएमटी उत्तर भारत का ऑटो हब बनकर उभरा है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सितंबर 2025 में हुई जीएसटी दर युक्तिकरण से जनता को राहत मिली है। इसे जीएसटी बचत उत्सव के रूप में मनाया गया। उन्होंने बताया कि 1 जून से 28 सितंबर तक वन टाइम सेटलमेंट स्कीम लागू की गई है। उन्होंने व्यापारियों और करदाताओं से इस स्कीम का लाभ उठाने का आह्वान भी किया।

जीआरपी टीम ने रेलवे जंक्शन पर चलाया नशामुक्त सफर-सुरक्षित यात्री अभियान

- नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज का सबसे बड़ा शत्रु : एसएचओ कृष्ण कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। रेलवे जंक्शन पर यात्रियों को जानकारी देते एसएचओ।

पुलिस अधीक्षक रेलवेज हरियाणा नीतिका गहलोत के मार्गदर्शन व डीएसपी राजेश चेची के नेतृत्व में नशा मुक्त रेलवे अभियान के अंतर्गत जीआरपी टीम स्टेशन को नशामुक्त बनाने में जुटी है। शनिवार को जीआरपी एसएचओ कृष्ण कुमार के नेतृत्व में नशा मुक्ति टीम ने स्टेशन परिसर में यात्रियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। इस अवसर पर कृष्ण कुमार ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। जीआरपी महिला एएसआई राजबाला ने यात्रियों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने कहा कि साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें। एसएचओ ने कहा कि यदि कोई भी असामाजिक तत्व, संदिग्ध व्यक्ति या वाहन दिखाई दे या किसी भी आपातकालीन स्थिति में तुरंत डायल 112 पर या नजदीकी पुलिस स्टेशन को सूचना दें। इसके अलावा नशा गतिविधियों की सूचना मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 पर करें।

शिविर में कर्मचारियों ने 61 यूनिट ब्लड किया डोनेट

बावल। विश्व रक्तदाता दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को बावल औद्योगिक क्षेत्र स्थित मुसासी ऑटो पार्ट्स कंपनी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। ललिता मेमोरियल हॉस्पिटल ब्लड बैंक की टीम के सहयोग से आयोजित कैंप में कंपनी के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और 61 यूनिट रक्त डोनेट किया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि ललित मिश्रा, अमित कुमार और डा. घनश्याम मित्तल ने संयुक्त रूप से किया। उन्होंने रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई पुण्य नहीं है, क्योंकि आपका दिया हुआ रक्त किसी मरते हुए व्यक्ति को नया जीवन दे सकता है। अतिथियों ने रक्तदाताओं को सम्मानित किया।

स्वच्छता अभियान के तहत ग्रामीणों को कचरा प्रबंधन को लेकर किया जागरूक

- एडीसी के मार्गदर्शन में 20 जून तक चलेगा अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। गांवों में सफाई अभियान चलाते हुए। फोटो : हरिभूमि

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में चलाए जा रहे जनकल्याणअभियान के तहत शनिवार को कई गांवों में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। सफाई कर्मियों ने घर-घर जाकर कूड़े का उठान किया और सार्वजनिक स्थलों-नालियों की सफाई की। मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद एवं एडीसी राहुल मोदी के मार्गदर्शन में ग्रामीण विकास विभाग की ओर से 20 जून तक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में ग्राम सचिवों की ओर से पंचायत सदस्यों, और ग्रामीणों को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2026 के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने अलग-अलग रंग कोड वाले डिब्बों गीला, सूखा, सैनिटरी और विशेष देखभाल वाला कचरा का इस्तेमाल करने के बारे में भी समझाया। डीसी अभिषेक मीणा ने अधिकारियों को स्वच्छता अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के निर्देश दिए।

रेवाड़ी। बैठक में मौजूद संगठन के पदाधिकारी व कार्यकर्ता।

जय किसान आंदोलन की जिला स्तरीय बैठक सम्पन्न, संगठन का हुआ विस्तार

रेवाड़ी। शनिवार को जय किसान आंदोलन की जिला स्तरीय बैठक नई अनाजमंडी स्थित किसान भवन में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मास्टर धर्म सिंह ने की। बैठक में संगठन के 70 से अधिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस मौके पर संगठन के विस्तार एवं मजबूती को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सर्वसम्मति से बाबूलाल कालाका को रेवाड़ी विधानसभा अध्यक्ष, सुरेंद्र सिंह मुंदड़ा को कोसली विधानसभा अध्यक्ष तथा प्रभात सिंह पाली को बावल विधानसभा अध्यक्ष नियुक्त किया गया। सभी नव-नियुक्त पदाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में संगठन का विस्तार करते हुए टीम गठन करने के निर्देश दिए गए। बैठक में निर्णय लिया कि किसानों के हितों से जुड़े मुद्दों तथा जनहित एवं सामाजिक कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया जाएगा।

एसआईआर अभियान का उद्देश्य मतदाता सूची का शुद्धिकरण व स्टीक बनानाः कुमार

- पीएम मोदी के नेतृत्व में देश पिछले 12वर्षों में प्रगति की ओर अग्रसर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

रेवाड़ी। वोटर संपर्क अभियान के दौरान पौधारोपण करते वीर कुमार यादव।

गांव गुरावड़ा में आयोजित वोटर संपर्क कार्यक्रम में शनिवार को भाजपा के वरिष्ठ नेता वीर कुमार यादव ने मतदाताओं से संवाद किया। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग की ओर से चलाया जा रहा एसआईआर अभियान एक संवैधानिक एवं सतत प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मतदाता सूची का शुद्धिकरण एवं उसे अधिक सटीक बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल होना तथा अपात्र नामों को हटाना लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाता है। उन्होंने बताया कि किसानों की ओर से फसल बेचने के बाद परिवार पहचान पत्र में आय वृद्धि तथा अन्य तकनीकी त्रुटियों से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए गुरावड़ा में शीघ्र ही एक विशेष कैंप आयोजित किया जाएगा। वीरकुमार यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पिछले 12 वर्षों में विकास, सुशासन और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत और पीएम आवास योजना जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं से करोड़ों लोगों को लाभ मिला है।

जिला पुलिस ने रोहिंग्या व बांग्लादेशियों की पहचान के लिए चलाया सर्च अभियान

रेवाड़ी। जिला पुलिस व स्वैत टीम ने शनिवार को थाना कोसली व रामपुरा क्षेत्र में अनाधिकृत रूप से रहने वाले रोहिंग्या व बांगलादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए सर्च अभियान चलाया। अभियान के तहत पुलिस ने ईट-भट्टों, झुग्गी-झोपड़ियों, होटल, पोल्ट्री फार्म व अन्य स्थानों पर संदिग्ध लोगों की जांच की। पुलिस टीम ने बाहरी श्रमिकों की भी जानकारी ली तथा उनके पहचान पत्र व वाहनों के कागजातों की भी जांच की। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले में अनाधिकृत रूप से किसी को भी रहने की छूट नहीं है। बाहरी लोगों की पहचान के लिए पुलिस का अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा। एसपी ने जिला वासियों से अपील करते हुए कहा कि सभी अपने पास काम करने वाले या किराए पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पुलिस वेरिफिकेशन जरूर कराएं।

रेवाड़ी। अभियान के दौरान लोगों के पहचान पत्र चैक करती पुलिस।

रेवाड़ी। जैन मंदिर के कार्यक्रम में मौजूद महिलाएं।

पारस समिति का उद्देश्य समाज में धार्मिक भावना को जागृत करनाः नीलू जैनाग

रेवाड़ी। जैन महिला पारस समिति की ओर से शहर के जैन नया मंदिर प्रांगण में कल्याण मंदिर पाठ का आयोजन किया गया। इस मौके पर समिति की सदस्याओं ने जैन तीर्थ सम्मेद शिखर जी कूट के 24 भगवानों के अर्घ्य अर्पित किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति की अध्यक्षा नीलू जैन ने की। अनिता जैन, त्रिशला जैन, अंतिमा जैन व सुचिता जैन ने कार्यक्रम में सहयोग दिया। इस मौके पर आयोजित धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विजेता रही सदस्य रजुल जैन, ज्योति जैन, सुमन जैन, याशिका जैन व तृषित जैन को पुरस्कृत किया गया। नीलू जैन ने कहा कि समिति का उद्देश्य समाज में धार्मिक भावना को जागृत करना है। कार्यक्रम में एकता जैन, चित्रांशी जैन, सरला जैन, कुसुम जैन, शिल्पी जैन, पूनम जैन व मिथलेश जैन मौजूद रहीं।

केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के करीबी प्रो. हंसराज पहुंचे ग्रामीणों के बीच

दक्षिणी हरियाणा में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार सराहनीय पहलः प्रो. हंसराज

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह सरकारी अस्पतालों में मुहैया करवा रही आधुनिक सेवाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते प्रो. हंसराज। फोटो : हरिभूमि

केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के करीबी भाजपा नेता प्रो. हंसराज ने कहा कि दक्षिणी हरियाणा के स्वास्थ्य ढांचे में विस्तार किया जाना स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव की पहल पर प्रदेश सरकार का सराहनीय कदम है। इससे दक्षिणी हरियाणा के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी। शनिवार को फर्रुखनगर सीएचसी पहुंचे प्रो. हंसराज यादव का ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया। प्रो. हंसराज ने कहा कि दक्षिणी हरियाणा के विकास को लेकर एक ओर जहां केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह केंद्र की योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर इस इलाके में लागू करा रहे हैं, तो स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव का फोकस इस इलाके के सरकारी अस्पतालों में प्राइवेट जैसी सुविधाएं मुहैया कराने पर है। स्वास्थ्य विभाग और मेदांता फाउंडेशन ऑफ पुअर एंड नीडी पेशेंट्स वेलफेयर ट्रस्ट के बीच हुए एमओयू से प्रदेश के स्वास्थ्य क्षेत्र में पीपीपी मॉडल के तहत नई मिसाल कायम होगी। इस पहल के तहत महेंद्रगढ़ के अटेली, रेवाड़ी के मीरपुर और गुरुग्राम जिले के फर्रुखनगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का उन्नयन किया जाएगा। प्रो. हंसराज यादव आज फर्रुखनगर पहुंचे जहा लोगो ने उनका स्वागत किया एक दूसरे को मिठाई खिलाई और केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत व केबिनेट मंत्री आरती राव का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस पहल के लिए हरियाणा सरकार के प्रयासों का आभार व्यक्त किया।

आरती राव का जताया आभार

प्रो. हंसराज यादव ने केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव और सीएम नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस निर्णय से पूरे दक्षिणी हरियाणा के लोगों में खुशी का माहौल है। यह निर्णय दक्षिण हरियाणा के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने वाला ऐतिहासिक कदम है। इससे गरीब, जरूरतमंद और ग्रामीण परिवारों को बड़ी राहत मिलेगी। अटेली स्वास्थ्य केंद्र को 50 बेड के उपमंडल अस्पताल के रूप में विकसित किया जाएगा, जबकि मीरपुर और फर्रुखनगर में आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा।

यह लोग रहे कार्यक्रम में मौजूद

ग्रामीणों की ओर से आयोजित कार्यक्रम में प्रो. हंसराज के साथ एडवोकेट नरेश कुमार राव, देशराज प्रधान, हरचंद सैनी, रमेश नंबरदार, अजीत जोनियावास, महेंद्र सिंह, विजय पंडित, जितेंद्र सैनी एडवोकेट, नरेश नंबरदार, प्रदीप सरपंच, विरेंद्र मोहम्मदपुर व चंदन सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

जिले के 11 सरकारी कॉलेजों में अब तक 50 प्रतिशत ही आवेदन

कॉलेजों में स्नातक कोर्सों में आवेदन के दो दिन शेष

पहली फाइनल मेरिट लिस्ट 27 जून को लगाई जाएगी

बची हुई सीटों के लिए 9 जुलाई को होगी फिजिकल काउंसलिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

जिले के सरकारी कॉलेजों में यूजी कोर्सों में दाखिले के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के दो दिन शेष रह गए है। विद्यार्थी 15 जून तक ही एडमिशन के लिए आवेदन कर सकते है। जिले के 11 सरकारी कॉलेजों में स्नातक के लिए 5380 के करीब सीटें है, लेकिन अभी तक इस सीटों के लिए 50 प्रतिशत से कम आवेदन ही पहुंचे हैं। एक बार एडमिशन की डेट बढ़ाई जा चुकी है अब आगे डेट बढ़ने की उम्मीद नहीं है। ऐसे में हायर एजुकेशन की तरफ से ओपन फिजिकल काउंसलिंग का शेड्यूल भी जारी कर दिया है। अंतिम तिथि निकलने के बाद कॉलेजों में ओपन काउंसलिंग में ही दाखिले किए जाएंगे। अब तक राजकीय महिला महाविद्यालय सेक्टर-18 में ही छात्राओं कुल सीटों से अधिक आवेदन आए है। कॉलेज में 1144 सीटों के लिए 1400 से अधिक आवेदन आ चुके हैं। इस सत्र में विद्यार्थियों की की बीसीए में ज्यादा रुचि है। इस कोर्स में सीटों से दोगुने आवेदन प्राप्त हो चुके हैं।

रेवाड़ी। सेक्टर-18 स्थित राजकीय महिला कॉलेज। फोटो : हरिभूमि

ये रहेगा स्नातक का आगामी शेड्यूल

यूजी कोर्सों में 15 जून तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन होंगे। इसके बाद तीन चरणों में काउंसलिंग होगी। पहली प्रोविजनल मेरिट लिस्ट 26 जून तथा पहली फाइनल मेरिट लिस्ट 27 जून को लगाई जाएगी। पहली मेरिट लिस्ट में नाम आने पर विद्यार्थी 28 जून से 1 जुलाई तक फीस जमा करा सकेंगे। दूसरी प्रोविजनल मेरिट लिस्ट 2 जुलाई को जारी होगी तथा दूसरी फाइनल मेरिट लिस्ट 3 जुलाई को लगाई जाएगी। दूसरी मेरिट लिस्ट के विद्यार्थी छात्र 4 जुलाई से 7 जुलाई तक फीस जमा कर सकेंगे। तीसरे चरण में बची हुई सीटों के लिए 9 जुलाई को फिजिकल काउंसलिंग होगी, जिसके बाद नए रजिस्ट्रेशन और फॉर्म एडिटिंग के लिए 10 जुलाई को ऑनलाइन पोर्टल फिर से खोला जाएगा। काउंसलिंग के दौरान भी सीटें खाली रहती हैं, तो 11 से 17 जुलाई तक 100 रुपए लेट फीस के साथ दाखिले होंगे। इसके बाद भी सीट खाली रही तो विद्यार्थी 18 से 24 जुलाई तक 100 रुपये लेट फीस के साथ 100 रुपये प्रतिदिन अतिरिक्त देकर काउंसलिंग में भाग ले सकेंगे।

आईजीयू में अर्थशास्त्र विभाग में 20 जून तक आवेदन

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में ऑनलाइन पंजीकरण करने की अंतिम तिथि 20 जून है। इच्छुक विद्यार्थी निर्धारित समयावधि के अंदर विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। विभागाध्यक्ष प्रो. सतीश कुमार ने बताया कि विभाग में प्रोफसर डा. विकास बत्रा, एसोसिएट प्रोफेसर डा. देविंदर सिंह तथा असिस्टेंट प्रोफेसर डा. ऋतु कुमारी जैसे योग्य एवं अनुभवी शिक्षक कार्यरत हैं, जो विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शोध मार्गदर्शन तथा करियर परामर्श प्रदान करते हैं। विभाग में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आधुनिक कक्षाएं, समृद्ध पुस्तकालय, ई-संसाधनों की सुविधा, शोध एवं परियोजना कार्यों के लिए मार्गदर्शन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं तथा विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। संस्थान के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतिष्ठित पदों एवं संस्थानों में चयन प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। प्रो. सतीश ने बताया कि यहां के छात्रों का चयन दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर हुआ है, जबकि अन्य छात्रों ने बैंकिंग क्षेत्र, नवोदय विद्यालय समिति, केंद्रीय विद्यालय संगठन तथा जिला न्यायालय में चयन प्राप्त कर संस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। उन्होंने कहा कि अर्थशास्त्र विभाग अपने समर्पित संकाय, शोधोन्मुख वातावरण तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं एवं व्यावसायिक जीवन के लिए तैयार कर रहा है।

रेवाड़ी। मार्ग पर अपनी गाड़िया खड़ी करके जाम लगाते उद्योगपति। फोटो : हरिभूमि

बिजली समस्या से परेशान लघु उद्योग संचालकों ने लगाया जाम, बोले-कामकाज हो रहा ठप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बावल

बावल क्षेत्र में पांचवे दिन भी बिजली व्यवस्था पूरी तरह बहाल नहीं हो पाई है। शनिवार को चौधरी चरण सिंह कृषि फार्म के सामने बावल-रेवाड़ी रोड़ पर बिजली की समस्या से परेशान लघु उद्योग संचालकों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए जाम लगा दिया। उद्योगपतियों ने अपनी गाड़ियां सड़क पर खड़ी करके यातायात बाधित कर दिया, जिससे दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गईं। गत दिवस शुक्रवार को बावल-प्राणपुरा रोड पर तथा वीरवार को बावल के तिवाड़ियां चौक पर ग्रामीणों ने जाम लगाया था। बिजली समस्या को लेकर लगातार तीसरे दिन भी वाहन चालकों को जाम का सामना कराना पड़ा। इस मौके पर राजीव कुमार, पृथ्वी सिंह, विनोद व आर डी यादव ने कहा कि उन्होंने बिजली निगम के कर्मचारियों के साथ मिलकर सड़क पर टूटे पड़े पेडों को हटवाया हैं ताकि बिजली चालू हो सकें, लेकिन उन्हें केवल चार घंटे बिजली दी गई। कंपनियों में जब बिना बिजली काम नहीं होगा तो वर्करों को सेलरी कैसे देंगे। सेक्टर-9 के उद्योग संचालक बिजली की समस्या से परेशान हैं। उद्योग संचालकों ने कहा कि सेक्टर में बिजली आपूर्ति बाधित रहने से फैक्ट्रियों का कामकाज ठप हो रहा है, जिससे उद्योगों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। उद्योगपतियों ने बिजली निगम के अधिकारियों पर फोन नहीं उठाने और समस्या का समाधान नहीं करने का आरोप लगाया।

रेवाड़ी। पुलिस से बात करते हुए उद्योगपति। फोटो : हरिभूमि

उद्योगपतियों को समझाकर जाम खुलवाया

जाम की सूचना मिलते ही बावल थाना प्रभारी फूल कुमार और कसौला थाना प्रभारी सतीश कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। उद्योग प्रतिनिधियों और पुलिस में तीखी बहस भी हुई। इसके बाद मौके पर पहुंचे बिजली निगम के कर्मचारियों व पुलिस अधिकारियों ने उद्योगपतियों को समझाकर जाम खुलवाया। इस अवसर पर अनेक उद्योगपति व स्थानीय नागरिक मौजूद थे।

योग अपनाकर व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रह सकता है: सरोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में पतंजलि योग समिति की जिला महिला प्रभारी सरोज आर्या के नेतृत्व में योग प्रोटोकॉल अभ्यास सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास किया। सरोज आर्या ने प्रतिभागियों को योग प्रोटोकॉल के अंतर्गत विभिन्न योगासनों, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास कराया। उन्होंने कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जिसे अपनाकर व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रह सकता है। उन्होंने सभी से नियमित योगाभ्यास करने तथा योग को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। इस मौके पर पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी दयाराम आर्य ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने के लिए जिले भर में योग जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। विभिन्न स्थानों पर योग प्रोटोकॉल अभ्यास सत्र आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि योग स्वस्थ जीवन का आधार है और इसे दैनिक दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

रेवाड़ी। शिविर में योगाभ्यास करते हुए महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

मनुष्य को जीवन स्वस्थ रखना है तो योग अपनाना अति आवश्यक: आर्य

रेवाड़ी। पतंजलि परिवार की ओर से गांव निमोठ के बाबा बिशन दास प्रांगण में चल रहे पांच दिवसीय योग शिविर का शनिवार को हवन के साथ समापन किया गया। इस मौके पर स्कूल की डायरेक्टर सुनीता आर्य व पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी नरेश यादव ने कहा कि मनुष्य को अगर अपना जीवन स्वस्थ रखना है तो योग अपनाना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य जंक फूड जैसे खान-पान से लोगों में हार्ट अटैक मोटापा, साइटिका, थायराइड अनेकों घातक बीमारियों से ग्रस्त है।

माता-पिता की स्मृति में नागरिक अस्पताल में वाटर कूलर लगाया

रेवाड़ी। सामाजिक कर्तव्य का निर्वहन करते हुए खोरी निवासी मुदगिल परिवार ने स्व. हरदयाल सिंह एवं कौशल्या देवी की स्मृति में वॉटर कूलर भेंट किया। शनिवार को नागरिक अस्पताल परिसर में वाटर कूलर का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर दयानंद शर्मा, हरीश शर्मा और आदर्श शर्मा ने कहा कि गर्मी के मौसम में वॉटर कूलर अस्पताल में आने वाले लोगों के लिए लाभदायक साबित होगा। उन्होंने कहा कि समाज की सेवा ही अपने पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि देने का सबसे अच्छा माध्यम है। इस मौके पर सुशीला देवी, दिनेश कौशिक, विपिन कुमार, अनूप शर्मा, सचिन शर्मा, भूपेंद्र शर्मा, पीएमओ डा. सुरेंद्र, डा. इंद्रजीत, सुभाष और राममेहर ने मुदगिल परिवार का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में सेवा भारती से नरेंद्र सहित क्षेत्र अनेक सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे।

रेवाड़ी। अस्पताल में वाटर कूलर का शुभारंभ करते हुए।

न्यूज डायरी

मकान में सेंध लगाकर नकदी और जेवरात ले गए चोर

रेवाड़ी। सनसिटी में चोर एक बंद मकान में सेंध लगाकर लाखों रुपये के जेवरात व नकदी चोरी कर ले गए। सिटी पुलिस ने मौका मुआयना करने के बाद चोरी का केस दर्ज कर लिया। पुलिस शिकायत में मूल रूप से दिल्ली के मंगालपुरी निवासी ट्रांसजेंडर सिमरन ने बताया कि वह अपने साथियों के साथ सनसिटी में रह रही है। पटौदी में एक जागरण समारोह में भाग लेने के लिए वह साथियों के साथ गई थी। वापस आने पर घर में लगा एसी नीचे गिरा हुआ मिला। मकान के अंदर रखी अलमारी का ताला टूटा हुआ था। चोर अलमारी से सोने की दो अंगूठियां, टॉप्स व अन्य जेवरात सहित नकदी भी चोरी कर ले गए। उसने एक युवक पर चोरी की आशंका जताई है। सिटी पुलिस ने उसकी शिकायत पर चोरी का केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी। आरोपी से पूछताछ के लिए पुलिस उसका पता लगाने के प्रयास कर रही है।

महाशय केदारमल की प्रतिमा का अनावरण समारोह 15 को

रेवाड़ी। जिले के गांव फतेहपुरी दड़ौली निवासी लोक गायक एवं हरियाणवी कवि महाशय केदारमल की प्रतिमा का अनावरण 15 जून को भिवानी जिले के गांव उमरावत में होने वाले राज्यस्तरीय समारोह में किया जाएगा। महाशय के शिष्य लोकगायक महाशय धर्मेंद्र मुरलीपुर ने बताया कि म्हारी संस्कृति म्हारा स्वाभिमान नामक संस्था के स्थापना दिवस के अवसर पर उमरावत स्थित सूर्य कवि दादा लख्मीचंद भवन में हरियाणा भर के एक दर्जन से ज्यादा लोककवियों तथा लोकगायकों की प्रतिमाओं का अनावरण किया जाएगा, जिनमें रेवाड़ी जिले से महाशय केदारमल का नाम शामिल है। उन्होंने बताया कि 15 से 20 जून तक संस्था की ओर से उमरावत की भवन में विशाल सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सांग, रागनी तथा हरियाणवी संस्कृति पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा। वरिष्ठ साहित्यकार एवं संस्कृति लेखक सत्यवीर नाहड़िया ने हरियाणवी लोक नाट्य परम्परा तथा लोकसंस्कृति पर केंद्रित महोत्सव तथा प्रतिमा स्थापना समारोह पर खुशी जाहिर करते हुए आयोजकों को बधाई दी है।

17 को धूमधाम से मनाई जाएगी वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 486वीं जयंती

रेवाड़ी। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 486वीं जयंती उपलक्ष्य में स्थानीय महाराणा प्रताप चौक पर 17 जून को पुष्पांजलि एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। महाराणा प्रताप यंती समिति के अध्यक्ष नरेश चौहान राष्ट्रपूत ने बताया कि बीते 33 वर्ष से प्रति वर्ष महाराणा प्रताप जयंती समिति युग पुरुष के यशोगान में ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जयंती का आयोजन करती आ रही है। बुधवार को प्रातः 9 बजे आचार्य सुखदेव आर्य के नेतृत्व में वैदिक हवन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। कार्यक्रम में हिमालय परिवार की प्रांतीय टीम को प्रथम सिंधु कुंभ लेह-लद्दाख में बड़ी संख्या में इलाके के प्रतापी परिवारों को ले जाने के लिए समिति की ओर से सम्मानित किया जाएगा।

खबर संक्षेप

मारपीट मामले में एक और आरोपी दबोचा

कोसली। पुलिस ने कारोली में मारपीट करने और धमकी देने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। मारपीट में घायल व्यक्ति के बयान पर पुलिस ने 8 जून को कई आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया था। आपसी कहासुनी के बाद मारपीट की गई थी। इस मामले में पुलिस ने कारोली निवासी चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। अब इस मामले में कारोली निवासी शुभम को गिरफ्तार किया गया है। तफ्तीश में शामिल करने के बाद आरोपी को पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

हादसे का आरोपी वाहन चालक काबू

धारूहेड़ा। पुलिस ने सड़क हादसे को अंजाम देने के बाद फरार हुए वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 28 मई को दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर हुए हादसे के बाद घायल के बयान पर चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस हादसे में दो लोग घायल हो गए थे। एक घायल के बयान पर पुलिस ने वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। मामले की जांच करते हुए पुलिस ने पंजाब के जिरकपुर निवासी चालक मेवासिंह को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को मामले की तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

बाइक चोरी का आरोपी वारंट पर

खोल। पुलिस ने बाइक चोरी के मामले में गिरफ्तार किए गए एक आरोपी को कोर्ट से प्रोडक्शन वारंट पर लिया है। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने बीते दिनों बाइक चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया था। पूछताछ के बाद पुलिस ने बाद में दो अन्य लोगों को भी चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया था। आरोपियों के कब्जे से चोरी की कई बाइक बरामद हुई थीं। थाना खोल पुलिस ने एक अन्य मामले में पाडला निवासी हेमंत को कोर्ट से प्रोडक्शन वारंट पर लिया है। आरोपी से चोरी के मामले में पूछताछ की जा रही है।

ग्रामीणों को नशा व साइबर अपराधों से दूर रहने के लिए किया जागरूक

रेवाड़ी। जिला पुलिस की ओर से नशा मुक्ति और समाजिक जागरूकता की दिशा में प्रयास जारी हैं। पुलिस की नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को गांव आशियाकी पांचोर में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों, साइबर अपराधों व यातायात के नियमों को लेकर जागरूक किया। इस अवसर पर टीम इंचार्ज इंस्पेक्टर रामपाल ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। उन्होंने ग्रामीणों से अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। पुलिस टीम ने ग्रामीणों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सभी को सतर्क रहकर किसी भी अनजान व्यक्ति से अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें।

ग्रामीणों ने उठाया भारतीय डाक विभाग के आधार सेवा शिविर का लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बावल

भारतीय डाक विभाग गुरुग्राम डिवीजन की ओर से शनिवार को गांव धारण स्थित बीएमडी यूथ क्लब कार्यालय में आधार सेवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों की आधार कार्ड से संबंधित विभिन्न समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। शिविर के दौरान आधार कार्ड में नाम, पता, जन्मतिथि व मोबाइल नंबर अपडेट कराने सहित अन्य आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराई गईं।

शिविर का संचालन गुरुग्राम डिवीजन के सिस्टम मैनेजर बलवान सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर गांव धारण के एसपीएम राकेश मीणा तथा डीपीएम जमीलाल भी मौजूद थे। उन्होंने ग्रामीणों को आधार सेवाओं की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। बीएमडी यूथ क्लब धारण के संस्थापक अरुण तंवर एवं सरपंच राजेश कुमार ने भारतीय डाक विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं की पहुंच बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सिस्टम मैनेजर बलवान सिंह ने कहा कि भारतीय डाक विभाग भविष्य में भी ग्रामीण क्षेत्रों में जनसेवा और जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा ताकि आमजन को सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ मिल सकें।

यदि समय रहते समस्या का समाधान नहीं किया गया तो आगामी मानसून में हालात और अधिक होंगे गंभीर

कॉलोनियों में एक सप्ताह से बह रहा सीवर का गंदा पानी

इन स्थानों पर बिगड़ रहे ज्यादा हालात

शहर की कंपनी बाग कॉलोनी की गली नंबर-5 व 7, सती कॉलोनी, नाईवाली चौक, सेक्टर-1 व अनाजमंडी सहित कई इलाकों में एक सप्ताह से सीवर ओवरफ्लों का गंदा पान सड़कों पर बह रहा है। लोगों को कहना है कि विभाग की ओर से नाईवाली चौक पर कई दिनों से मशीन लगाई हुई है, जिससे पीछे की कॉलोनियों के सीवर का पानी आग नहीं जा रहा है। लाइन जाम होने के कारण सीवर ओवरफ्लो होकर कॉलोनियों में परेशानी बढ़ा रहे है। शिकायत देने पर भी विभाग के अधिकारियों की ओर से समस्या का ठोस समाधान नहीं किया जा रहा है और सफाई के लिए आने वाले कर्मचारी खानापूर्ति करके जा रहे है।

रेवाड़ी। शहर की सड़क पर उफान मार रहा सीवर। फोटो : हरिभूमि

दुर्गंध ने बढ़ाई लोगों की परेशानी

■ राहगीरों व वाहन चालकों को भी आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शहर के कई इलाकों में सीवर ओवरफ्लो की समस्या लगातार गंभीर होती जा रही है। सड़कों पर गंदा पानी जमा होने से स्थानीय निवासियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि सीवर लाइन जाम होने के कारण गंदा पानी गलियों और सड़कों पर बह रहा है, जिससे दुर्गंध फैल रही है और संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। निवासियों के अनुसार कई बार संबंधित विभाग को शिकायत देने के बावजूद समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो पा रहा है। गर्मी के मौसम में स्थिति और भी खराब हो गई है। राहगीरों तथा वाहन चालकों को भी आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों ने नगर परिषद एवं जन स्वास्थ्य विभाग से जल्द से जल्द सीवर लाइनों की सफाई कराने और गंदे पानी की निकासी व्यवस्था को दुरुस्त करने की मांग की है। उनका कहना है कि यदि समय रहते समस्या का समाधान नहीं किया गया तो आगामी मानसून के दिनों में हालात और अधिक गंभीर हो सकते हैं।

रेवाड़ी। कंपनी बाग की गली नंबर-5 में भरा सीवर का गंदा पानी, सेक्टर-1 में पार्क के पास जमा सीवर का गंदा पानी तथा कंपनी बाग की गली नंबर-7 में सीवर साफ करता कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

कानून व्यवस्था के लिए यातायात नियमों का पालन करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी

रेवाड़ी। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने वाहन चालकों को चेतावनी देते हुए कहा कि यातायात नियमों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। बिना नंबर प्लेट के वाहन चलाना, वाहनों पर काले शीशे लगाना तथा बुलेट मोटरसाइकिलों में संशोधित साइलेंसरों का प्रयोग करके अवैध रूप से पटाखा जैसी आवाज निकालने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। एसपी ने कहा कि सड़क सुरक्षा और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए यातायात नियमों का पालन करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा तथा उनके खिलाफ नियमानुसार चालान और अन्य कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिले में चेकिंग अभियान के तहत यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों पर विशेष नजर रखी जा रही है। एसपी ने कहा कि बुलेट मोटरसाइकिलों में पटाखा जैसी तेज आवाज पैदा करने वाले साइलेंसर लगाना न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि ये आमजन के लिए परेशानी और ध्वनि प्रदूषण का कारण भी बनते हैं। उन्होंने वाहन मालिकों से अपील करते हुए कहा कि वे अपने वाहनों पर निर्धारित नंबर प्लेट लगाएं, यातायात नियमों का पालन करें। तथा किसी भी प्रकार के अवैध संशोधन से बचें।

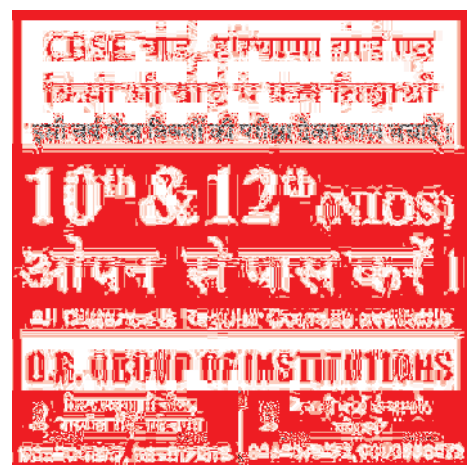

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 14 जून 2026

रिलेशनशिप का नया ट्रेंड
डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड-गर्लफ्रेंड

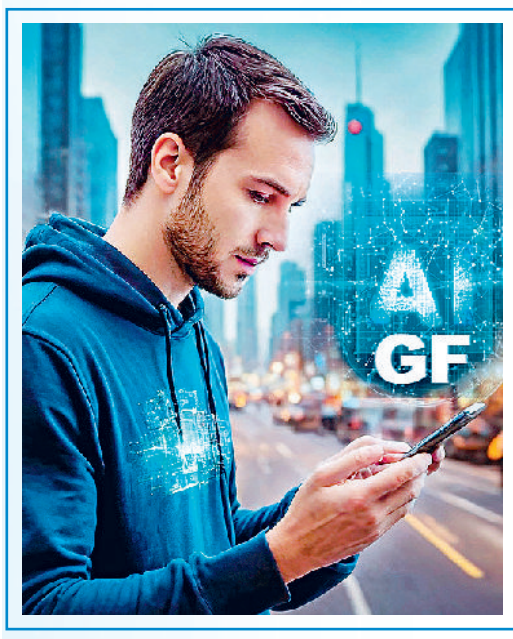

हाल के वर्षों में एआई ने अनेक प्रोफेशंस में जबर्दस्त बदलाव कर दिया है। अब प्रोफेशंस से भी आगे बढ़कर रिलेशनशिप में भी इसका दखल बढ़ने लगा है। इसका प्रमाण है, रियल के बजाय डिजिटल पार्टनर बनाने का बढ़ता ट्रेंड। यह ट्रेंड क्या है, यह क्यों बढ़ रहा है और आने वाले समय में इसके किस तरह के असर हम सभी को देखने को मिल सकते हैं, इसका डिटेल्ड एनालिसिस।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

भले ही आज यह बात आपको थोड़ा असहज कर सकती है, लेकिन यह सच है कि रिलेशनशिप का नया ट्रेंड तेजी से सामने आ रहा है, वो है डिजिटल गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड। डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड (जीएफ/बीएफ) कोई साधारण ट्रेंड नहीं है, बल्कि इंसानी रिश्तों के ढांचे में अभूतपूर्व बदलाव की शुरुआत है।

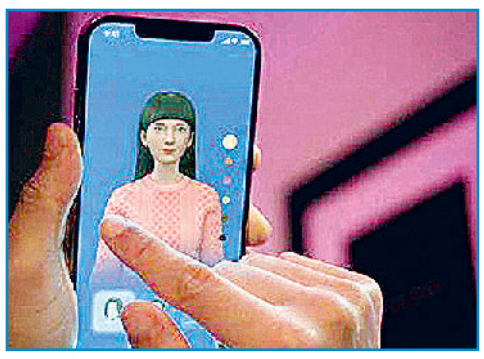

रियल पार्टनर जैसी फीलिंग

आज एआई आधारित एप्स और विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे रिपेलिका और करेक्टर एआई मौजूद हैं, जो यूजर के साथ उसी तरह रोमांटिक, भावनात्मक या निजी बातचीत करते हैं, जैसे ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड आपस में करते हैं। ये आपकी पसंद ही नहीं भावनाओं को भी समझते हैं, आपकी बातों पर प्रतिक्रिया देते हैं और पर्सनल पार्टनर जैसा अनुभव देते हैं।

करोड़ों लोग हैं एक्टिव

डिजिटल गर्लफ्रेंड और डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड कोई रेयर या एक्सेप्शनल फिनोमिना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अगर एआई कंपेनियनशिप एप्स के आंकड़ों को मानें तो इस समय दुनिया में 5 से 6 करोड़ जीएफ/बीएफ सक्रिय रूप में मौजूद हैं। पूरी दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो इनके साथ किसी न किसी रूप से चैटबॉट्स के जरिए जुड़ते हैं। इनमें सिर्फ रिपेलिका के ही 3-4 करोड़ यूजर हैं, जबकि करेक्टर एआई के 2 करोड़ सिर्फ मंथली एक्टिव यूजर हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया के 21 फीसदी वयस्क एआई कंपेनियनशिप का इस्तेमाल कर चुके हैं और 72 फीसदी किशोर कम से कम एक बार ऐसे एआई से बातचीत की है। मतलब यह कि अब यह कुछ थोड़े से लोगों का शौक या प्रयोग भर नहीं है बल्कि यह बड़ी जनसंख्या का न्यू नॉर्मल व्यवहार है।

अपने देश में भी बढ़ रहा ट्रेंड

भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। हालांकि भारत के अलग से सटीक आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इसका बढ़ता ट्रेंड साफ तौर पर देखा जा सकता है। और ऐसा हो भी क्यों न, आखिर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर देश है। भारत में एक अरब से ज्यादा मोबाइल फोन इस्तेमाल में हैं और इनमें 80 करोड़ से ज्यादा में इंटरनेट का इस्तेमाल होता है। अगर एआई एप्स डाउनलोड ग्रोथ 2023-24 को देखें, तो भारत में इसकी रफ्तार 1400 फीसदी रही है यानी, हाल के सालों में भारत में एआई एप्स को डाउनलोड करने की रफ्तार 14 गुना तक बढ़ी है। क्योंकि भारत में मोबाइल फोन के सबसे बड़े उपभोक्ता 18 से 30 साल के युवा हैं। इसलिए भी भारत में एआई कंपेनियनशिप की मांग अविश्वसनीय रफ्तार से बढ़ रही है। क्योंकि इंटरनेट इस्तेमाल करने वाला यही वर्ग (18-30) सबसे बड़ा इंटरनेट यूजर वर्ग है। इसके बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि भारत में यह सिलसिला अभी शुरुआती चलन में है, भले इसकी रफ्तार बहुत तेज हो।

इस ट्रेंड के बढ़ने की वजहें

सवाल है, आखिर इंसानों को डिजिटल जीएफ और बीएफ तक जाने की जरूरत ही क्यों पड़ी? यानी हम आखिर यहां पहुंचे क्यों और कैसे? इसका सबसे बड़ा कारण है लोगों में बढ़ता अकेलापन। शहरी जीवन, काम का दबाव, टूटते सामाजिक नेटवर्क और भावनात्मक सहारा ढूंढ़ते युवा। वास्तव में यही वजहें हैं, जिनके चलते पिछले कुछ सालों में ही डिजिटल जीएफ/बीएफ की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। असली रिश्तों में लगातार बढ़ती असहमति, समझौते और जिम्मेदारियां एआई रिश्तों की तरफ हमें मोड़ रही हैं, क्योंकि वहां इस तरह की दुश्वारियां या तो नहीं हैं या इतनी नहीं है कि परेशान करके रख दें। क्योंकि एआई रिश्ते 'कंट्रोल्ड' होते हैं और उनको संभालना आसान होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि एआई अब इस कदर एडवांस हो चुका है कि वह लोगों को 'सोचने और समझने' का भी भ्रम पैदा कर रहा है।

रियल रिलेशन होंगे वीक

इस उभरते नए डिजिटल रिलेशन को लेकर गंभीर सवाल यह है कि अगर इस सिलसिले को जल्द रोका न गया, तो क्या होगा? भले ही अभी यह ट्रेंड रोमांचित कर रहा है, लेकिन सच है कि इससे हमारे जैविक रिश्ते आने वाले दिनों में बेहद कमजोर हो सकते हैं। अगर संबंध विशेषज्ञों की मानें तो यह सिलसिला इसी तरह बेकाबू आगे बढ़ता रहा तो असली रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगेंगी। हममें से ज्यादातर लोगों के रिश्तों के नाम एआई पार्टनर होंगे, क्योंकि एआई पार्टनर झगड़ा नहीं करते और हमेशा आपकी हां में हां मिलाते हैं। इससे असली रिश्ते जटिल लगने लगते हैं और एआई रिश्ते आकर्षक हो जाते हैं। जो लोग हर दिन एआई के साथ एक से दो घंटे के लिए संपर्क में रहते हैं, उन्हें एआई से लगाव हो जाता है। वे उसे अपने पार्टनर के रूप में स्वीकार करने लगते हैं। यह वैसा ही है, जैसे सोशल मीडिया एडिक्शन। पर, यह उससे भी एक कदम आगे का एडिक्शन है, क्योंकि इससे हमारे न सिर्फ भावनात्मक रिश्ते पर चोट लग रही है बल्कि इसके कारण हमारे समाज का सदियों से मौजूद पारंपरिक ढांचा दरकने लगा है।

मेंटल हेल्थ पर बुरा असर

डिजिटल रिलेशन का असर सिर्फ भावनात्मक रिश्तों तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि बढ़ते जीएफ/बीएफ ट्रेंड के कारण हमारे युवाओं के मेंटल हेल्थ पर भी गंभीर असर पड़ता है, क्योंकि शुरुआत में ये डिजिटल ब्वॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड भले राहत देते हों, लेकिन जब आप लगातार इनके टच में रहते हैं या इनका इस्तेमाल करते हैं, तो ये न केवल आपको अकेलेपन के दलदल में खींच ले जाते हैं बल्कि आपको कई तरह की हताशाओं और निराशाओं से भी भर देते हैं। अकसर एआई कंपेनियनशिप के साथ जो लोग खुश होते हैं, उन्हें नजदीक के इंसानों से रिश्ते बनाने में बड़ी मुश्किल लगती है और अगर किसी तरह से इनके रिश्ते बन भी गए, तो उन्हें यह रिश्ते बहुत पसंद नहीं आते। *

बढ़ सकती हैं कई तरह की समस्याएं

डिजिटल जीएफ/बीएफ का बढ़ता ट्रेंड सचमुच में डरावना है। इससे आने वाले समय में कई समस्याएं सामने आ सकती हैं। इसके बढ़ने से शादी और परिवार की संस्था कमजोर होगी। कस्टम पार्टनर की आदत यानी हम जैसा साथी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में अपनी कल्पना के साथी की तलाश में रहने लगेंगे। अगर यह चलन इसी तरह तेजी से बढ़ता रहा, तो देश और दुनिया में अकेले रहने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी। कई विशेषज्ञों के मुताबिक तो अगले दो-तीन दशकों में अकेले रहने वाले लोग, साथ में रहने वाले लोगों से भी ज्यादा हो सकते हैं। इससे सामाजिक दूरी भी बढ़ेगी। यह ट्रेंड मानव समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

इंसानी सभ्यता की शुरुआत से ही हमेशा जवान, खूबसूरत दिखने की चाहत रही है। इसे पाने के लिए नेचुरल तरीकों से लेकर, साइंस, दवाएं और अब एआई तक का यूज किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही खूबसूरती का कोई पर्मानेंट सॉल्यूशन हमें मिल जाएगा।

पर्मानेंट खूबसूरती की चाहत
जल्द मिल सकता है सॉल्यूशन

{ टेक्नोसाइंस / प्रतिमा अरोड़ा }

इंसानी खूबसूरती का क्या कोई स्थायी और सार्वभौमिक फार्मूला हो सकता है? 19वीं शताब्दी से ही विज्ञान इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहा है। आधुनिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जेनेटिक्स और कॉस्मेटिक मेडिसिन का अब लगभग यह केंद्रीय विषय बन चुका है कि दुनिया भर के इंसानों के लिए एक सार्वभौमिक खूबसूरती का पैमाना क्या हो और इसे पूरी दुनिया के स्तर पर संभव कैसे बनाया जाए? यह सोच और यह खोज इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इंसान सदियों से सुंदर होने के उपाय खोजता रहा है। कभी प्राकृतिक नुस्खों से, कभी शल्य चिकित्सा से, कभी जीन एडिटिंग से, तो अब एआई आधारित तकनीकों से भी।

खूबसूरती की खोज की शुरुआत

19वीं सदी के अंत से ही वैज्ञानिक इंसान की स्थायी खूबसूरती का समाधान खोज रहे हैं। विशेषकर जब से शरीर रचना विज्ञान यानी एनाटॉमी और त्वचा विज्ञान यानी डर्मेटोलॉजी का व्यवस्थित विकास हुआ। तभी से विज्ञान कुछ बातों पर फोकस कर रहा है। जैसे-त्वचा की संरचना का विज्ञान क्या है और इसे हमेशा जवान कैसे बनाए रखा जा सकता है? आखिर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है और इसे कैसे रोका जा सकता है? हार्मोन और सौंदर्य के बीच क्या संबंध हैं, क्या हार्मोन में ही इंसानी सौंदर्य का रहस्य छिपा है? 20वीं सदी के मध्य में प्लास्टिक सर्जरी के बाद कॉस्मेटिक सर्जरी लगभग चमत्कार की तरह उभरकर सामने आई। इस दौर में अनेक जैविक शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि त्वचा का रंग, बालों की बनावट, चेहरे की आकृति और झुर्रियां इन सबका बड़ा हिस्सा जीन द्वारा नियंत्रित होता है। अतः जीन नियंत्रण का विज्ञान समझ लिया जाए तो एक तरह से खूबसूरती पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सौंदर्य का केंद्र जेनेटिक्स

साल 2003 में ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट लांच हुआ और यह विज्ञान के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इससे यह समझ में आया कि मानव शरीर में मौजूद हजारों जीन, हमारे शरीर की अलग-अलग संरचनाओं और गुणों के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध से पता चला त्वचा की मोटाई का कारण क्या है? कोलेजन का उत्पादन कैसे होता है? उम्र बढ़ने की गति क्या होती है? बाल झड़ते क्यों हैं? केंद्रीय रूप से इन सबके पीछे विशिष्ट कारण सिर्फ जीन हैं। आज वैज्ञानिक जीनों की पहचान करके एजिंग के रहस्य का पर्दाफाश करने में लगे हैं। इस शोध और लगातार कोशिश का निष्कर्ष यह है कि सैद्धांतिक रूप से जीन स्तर पर बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है।

प्रभावी है कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी

हालांकि कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी अभी अस्थायी ही है। लेकिन निश्चित रूप से यह सौंदर्य विज्ञान का सबसे विकसित क्षेत्र है और एस्थेटिक मेडिसिन को भविष्य इंसान की खूबसूरती को स्थायी रूप देने में सक्षम माना जा रहा है। आज इसी विज्ञान के चलते-बोटोक्स, डर्मल फिलर्स, लेजर स्किन रिसर्फेसिंग तथा केमिकल पिल्स जैसी प्रक्रियाओं से लोग अपनी झुर्रियां कम कर रहे हैं। त्वचा को चिकनी, मुलायम और टाइट रख पाने में सफल हो रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि चेहरे को पसंदीदा आकृति देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि अभी यह 100 फीसदी संभव नहीं है, लेकिन हर गुजरते साल के साथ यह पहले से बेहतर होती जा रही है। इस बात का सबूत है कि बहुत जल्द इंसानी खूबसूरती का स्थायी समाधान बनकर कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी सामने आएगा।

जीन एडिटिंग में है भविष्य

साल 2012 के बाद जीन एडिटिंग तकनीक, जिसे सीआरआईएसपीआर-सीएएस-9 कहा जाता है, ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी। इस तकनीक के जरिए वैज्ञानिक खराब जीन काट सकते हैं, नए जीन जोड़ सकते हैं, जीन के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। ये सब सहूलियतें उम्मीद जता रही हैं कि भविष्य में इंसान गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, थैलेसीमिया और जेनेटिक डिसऑर्डर से पार पाने में सफल रहेगा। एजिंग के प्रभाव को धीमा किया जा सकता है, बालों के झड़ने को रोका जा सकता है, त्वचा को युवा बनाए रखने की स्थायी तरकीब ढूंढ़ी जा सकती है। लब्बोलुआब यह कि सिर्फ सुंदरता बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए, जीन एडिटिंग की कवायद लगातार जारी है।

एआई और पर्सनलाइज्ड ब्यूटी

एआई आधारित सिस्टम के जरिए अब हम यह जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति की त्वचा कितनी बूढ़ी है और वह किस रफ्तार से बूढ़ी हो रही है? वास्तव में इस सारी जानकारी को पर्सनलाइज्ड ब्यूटी प्लान के नाम से जानते हैं और इस प्लान के अस्तित्व में आने के बाद अब अलग-अलग इंसानों का स्वतंत्र रूप से खूबसूरत और स्वस्थ होना ज्यादा आसान और गारंटीड हुआ है। वैज्ञानिकों को भरोसा है कि अब खूबसूरती का स्थायी समाधान हासिल करने में बहुत देर नहीं है। *

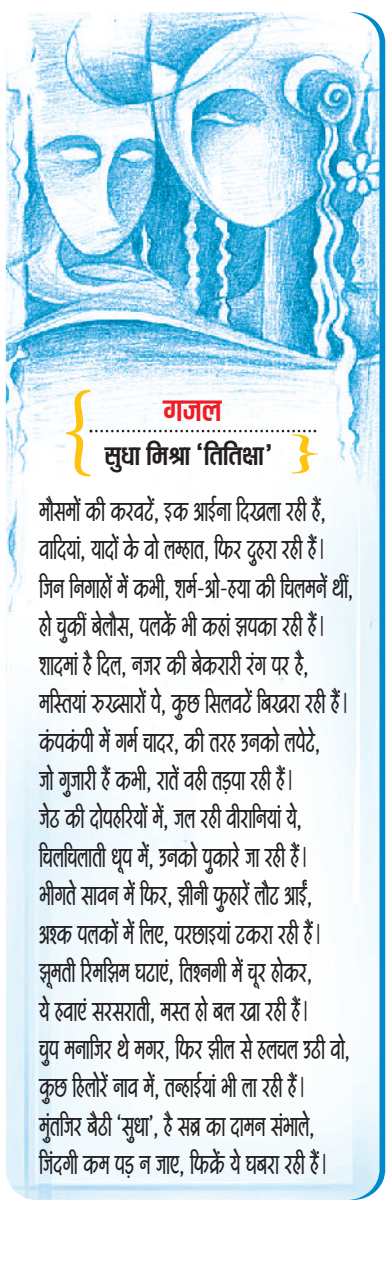

{ गजल / सुधा मिश्रा 'तितिक्षा' }

मौसमों की करवटें, इक आईना दिखला रही हैं,
वादियां, यादों के वो लम्हात, फिर दुहरा रही हैं।
जिन निगाहों में कभी, शर्म-ओ-हया की थिलमनें थीं,
हो चुकीं बेलौस, पलकें भी कहां झपका रही हैं।
शादमां है दिल, नजर की बेकरारी रंग पर है,
मस्तियां रुख्सारों पे, कुछ सिलवटें बिखरा रही हैं।
कंपकंपी में गर्म चादर, की तरह उनको लपेटे,
जो गुजारी हैं कभी, रातें वही तड़पा रही हैं।
जेठ की दोपहरियों में, जल रही वीरानियां ये,
चिलचिलाती धूप में, उनको पुकारे जा रही हैं।
भीगते सावन में फिर, ज़ीनी फुहारें लौट आईं,
अश्क पलकों में लिए, परछाइयां टकरा रही हैं।
झूमती रिमझिम घटाएं, तिश्नगी में चूर होकर,
ये ख्वाएं सरसराती, मस्त हो बल खा रही हैं।
चुप मनाजिर थे मगर, फिर झील से हलचल उठी वो,
कुछ हिलोरें नाव में, तन्हाईयां भी ला रही हैं।
मुंतजिर बैठी 'सुधा', है सब्र का दामन संभाले,
जिंदगी कम पड़ न जाए, फिक्रें ये घबरा रही हैं।

{ स्मरण / अरविंद कुमार }

सभी करते थे बाबू जी का सम्मान

हिंदी के प्रख्यात कथाकार अमरकांत जी का यह जन्मशती वर्ष है। उनकी कहानियों और उपन्यासों से तो अधिकांश साहित्यप्रेमी परिचित हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और स्वभाव में उपस्थित सदाशयता, विनम्रता के बारे में लोग कम ही जानते हैं। उनके सुपुत्र अरविंद कुमार ने अपने पिता से जुड़ी कुछ भावभीनी स्मृतियां **हरिभूमि** से साझा कीं। दुर्भाग्य से कुछ माह पूर्व अरविंद जी का निधन हो गया।

बाबू जी (अमरकांत जी) सपरिवार लखनऊ से जब करेलाबाग कॉलोनी (इलाहाबाद अब प्रयागराज) में आकर रहने लगे तो वहां एक अलग माहौल देखने को मिला। इस कॉलोनी में पांच सौ चार क्वार्टर्स हुआ करते थे, जिसमें हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई सभी रहा करते। वहां बहुत ही सुखद सामाजिक रिश्तों का ताना-बाना, सौहार्दपूर्ण वातावरण देखने को मिला। हर तरफ हरियाली एवं सांस्कृतिक परिवेश का माहौल था। हमारे क्वार्टर के ठीक सामने एक बड़ा अमलतास का पेड़ था। गर्मियों में इसके फूल खिलते तो ऐसा महसूस होता था, जैसे पेड़ पीले गहनों से सजा हुआ है, एक बार नामवर सिंह जी दो-चार लोगों के साथ आए तो इस स्थान ने उन्हें अभिभूत कर दिया, वे बोले, 'अमरकांत जी हम लोग इसी मनोरम जगह पर बैठेंगे। सुबह का समय, यहां की अनुभूति कैसी होती है, महसूस किया जाए।' दरअसल, पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षियों का आवागमन, उनका कलरव मोहक लगता। इसीलिए आने वाले लोगों को यह स्थान मनोरम लगता।

कॉलोनी के बाहर की एक सड़क (नूर उल्लाह रोड, जो स्टेशन से सीधी करेली गांव तक जाती) पर मिस्टर रफी अहमद नाम के व्यक्ति का प्रेस एवं पेपर कटिंग मशीन लगी थी। इस स्थान पर रोजाना दो खेल शतरंज एवं कैरम सायं सात बजे से रात्रि बारह बजे तक नियम से खेला जाता। रफी साहब का बाबू जी से बहुत अच्छा संबंध था। बाबू जी को भी उक्त दोनों खेल पसंद थे। शनिवार के दिन अकसर वहां उनका इंतजार रहता। बगल के मोहल्ला रसूलपुर से भी शतरंज और कैरम में रुचि रखने वाले कुछ लोग आते, जिसमें दो नाम खासतौर पर मुझे याद हैं एक बहार आलम, जो पेशे से वकील, साहित्य कला में भी दिलचस्पी रखते थे। और उनके छोटे भाई नन्हे पहलवान भी उनके साथ आया करते थे। एक रोज की बात है, मां ने मुझसे कहा, 'रात अधिक हो गई है। रफी अहमद के यहां जाकर देखो बाबू जी अभी आए क्यों नहीं?' मैं कुछ ही समय पश्चात वहां पहुंच गया। खेल में बड़ी खामोशी थी। शतरंज की अंतिम बाजी पर लोगों की निगाहें गड़ी हुई थीं। कई शोहरतमंद गणमान्य व्यक्तियों की मौजूदगी में खेल हो रहा था। उर्दू अनुवादक हुनर साहब, स्थानीय विधायक हबीब अहमद आपस में बाजी लगा बैठे थे। बाबू जी की दूसरी तरफ खिलाड़ी बहार आलम थे। पंद्रह मिनट का समय लगा, बाजी बाबू जी ने अपने पक्ष में कर ली। सभी बाबू जी को बधाई देने लगे। पर वे बहार आलम के खेल की सराहना करते जा रहे थे, 'बहुत अच्छा खेला आपने।' बाबूजी का स्वभाव ऐसा ही था, उनमें दंभ जरा भी नहीं था।

बाबूजी से जुड़ी एक और स्मृति याद आ रही है। अक्टूबर 1987 का दिन, वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। वे मेटाबॉलिक बोन डिजीज से ग्रसित हो गए। उन्हें स्पाइनल कॉर्ड में इंफेक्शन हो गया था। प्रारंभ में कई डॉक्टरों से संपर्क किया गया, डॉक्टरों ने जॉगिंग और एक्सरसाइज करने की सलाह दी। उन्हें पेनकिलर के सहारे मुक्त कर दिया गया। समस्या यह हो गई कि उन्हें कोई भी खान-पान की चीज अच्छी नहीं लग रही थी और उनके बैक बोन में असहनीय दर्द था। मेडिकल कॉलेज के हड्डी के एक्सपर्ट डॉक्टरों ने कहा,'घबराने की बात नहीं है उम्र का तकाजा है।' जबकि ऐसी भी उम्र नहीं थी कि उस पर दोष मढ़ा जाए। बहरहाल, वे घर आ गए। मगर समस्या जस की तस बनी रही।

वे उन दिनों महिलाओं की पत्रिका 'मनोरमा' का संपादन कर रहे थे, किंतु स्वास्थ्य की वजह से असमर्थ हो गए थे। इसकी जानकारी डॉ. शांति चौधरी जी को हुई तो वे भागे-भागे घर पर आईं और पूरी जानकारी ली। उन्होंने अगले दिन इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में वीआईपी वार्ड बुक करवाया। सभी चेकअप हुए। जानकारी मिली कि बाबू जी का हीमोग्लोबिन चार प्रतिशत पर आ गया है, जोकि बहुत ही चिंताजनक था। नामी विशेषज्ञ डॉक्टर ने देखा। बाबू जी दो दिन अस्पताल में रहकर वापस घर आ गए। शांति चौधरी जी, बाबू जी को पिता तुल्य मानती थीं। हम लोगों का उनसे बहुत आत्मीय रिश्ता रहा है। वह 'मनोरमा' से विशेष कार्याधिकारी के रूप में जुड़ी थीं और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज में पीआरओ के पद पर थीं।

कुछ दिनों तक जब बाबू जी की सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ तो चिंता हुई। तभी उन्हें देखने के लिए एस. के. दुबे आए जो टाइम्स ऑफ इंडिया के ब्यूरो चीफ थे। उन्होंने बताया डॉ. आर. सी. गुप्ता ऑस्ट्रेलिया से आ गए हैं, एक बार उन्हें बाबू जी को दिखाया जाएगा। उस समय रात्रि के आठ बजे हुए थे। लेकिन मुझे दूसरे दिन पर न टालकर रात्रि में ही ले जाना उचित लगा।

क्लीनिक बंद होने का समय रात्रि नौ बजे तक था। हम लोग पौने नौ बजे अस्पताल पहुंच गए। काउंटर बंद हो रहा था। डॉक्टर के असिस्टेंट डॉ. ए. के. सिंह ने बताया कि आप फीस जल्दी जमा कर दें, डॉ. साहब उठने वाले हैं। तभी डॉ. आर. सी. गुप्ता हम लोगों के समीप आए। उनकी पोशाक, पैर में खड़ाऊ और खद्दर का कुर्ता-पाजामा। पूछा, 'इन्हें क्या हो गया?' मैंने सभी बातें बताईं। उन्होंने असिस्टेंट डॉ. सिंह से कहा कि उस जगह का एक्स-रे करें जहां दर्द है। मैंने बताया प्रेस में जॉब करते हैं। फिर उनका सवाल था खड़े होकर काम करते हैं या बैठकर? मैंने कहा, 'बैठकर ही करते हैं।'

डॉक्टर गुप्ता ने पूछा, 'प्रेस कहां पर है?' जब मैंने प्रेस का नाम बताया, तो बोले, 'अरे यह प्रेस तो बहुत बड़ा है। यहां से तो पांच-छह मशहूर पत्रिकाएं निकलती हैं माया, मनोरमा, सत्यकथा, मनोहर कहानियां, प्रोब इंडिया। मनोरमा के संपादक तुम्हारे पिता के नाम वाले ही हैं, उनका नाम अमरकांत है, मगर वह बड़े राइटर हैं।'

मैंने जब उनसे कहा कि वे यही हैं। इस पर पहले तो डॉक्टर साहब मुझे कुछ सेकेंड एकटक देखते रहे फिर उठकर एक्स-रे रूम में गए। कुछ सेकेंड में डॉक्टर ए. के. सिंह जी बाहर आए और रसीद काउंटर रूम में गए। मेरे जमा किए गए पैसे लाकर विनम्रतापूर्वक मुझे दे दिए। बोले, 'डॉक्टर साहब ने पैसे वापस करने के लिए कहा है।' डॉक्टर आर. सी. गुप्ता पंद्रह-बीस मिनट में अपने चैंबर में वापस आ गए, बोले, 'जो मुझे शक था वही निकला।' उन्होंने अपने क्लीनिक से पूरे एक माह की दवा मुझे दी। मैं पैसे निकालने लगा, तो मना कर दिया, फिर बोले 'इनका पूरा इलाज मैं करूंगा। आपको कोई तनाव नहीं लेना है। मैं आपके साथ हूं। मुझे अमरकांत जी की सेवा करने का मौका मिला, मेरा सौभाग्य है। मैं कमिश्नर, मंत्री के घर नहीं जाता हूं, लेकिन मैं आपके घर नियमित आकर इनको देखूंगा। अस्पताल आने की जरूरत नहीं है, घर पर ही सभी इंतजाम करवा दूंगा।' उन्होंने सच में ऐसा ही किया। घर पर ही बाबू जी को ट्रैक्शन लगवाया, साथ ही कमर से लेकर छाती तक प्लास्टर भी करवाया। छह माह तक वे बाबू जी को देखने घर नियमित आते रहे, न कभी फीस लिया और दवा, इंजेक्शन के खर्च से भी मुक्त रखा। बाबू जी छह माह ट्रैक्शन, प्लास्टर और दवा पर रहे, सीधे लेटे रहते। मर्ज जरूर दूर हो गया किंतु स्पाइनल कॉर्ड डिफार्म हो गया। बाबू जी को कष्ट तो बहुत रहा लेकिन डॉक्टर आर. सी. गुप्ता जैसे लोगों का उनके प्रति आदर और प्रेम देखकर मैं अभिभूत हो जाता था। बाबू जी इतने बड़े लेखक-संपादक थे लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना सरल रहता कि हर कोई उनका सम्मान करता था। *

सैर-सपाटा
अंशु सिंह

भारत के उत्तरपूर्व में छोटा सा प्रदेश है- सिक्किम। इसका एक तिहाई हिस्सा बायोस्फीयर रिजर्व और यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है, जहां दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट कंचनजंगा स्थित है। यहां की संस्कृति मिली-जुली है। खाना अनोखा है, नजारे शानदार, सड़कें साफ-सुथरी और माहौल बहुत शांत है। कुछ समय पूर्व ही सिक्किम की यात्रा से लौटीं लेखिका इसकी खूबसूरती बयां कर रही हैं अपनी जुबानी।

जन्नत से कम नहीं सिक्किम

हालांकि देश के अलग-अलग हिस्से में यात्राएं तो मैंने कई की हैं। लेकिन अब तक देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में से कहीं जाना नहीं हुआ था। इसलिए जिस दिन सिक्किम यात्रा का प्लान फाइनल हुआ, उस दिन से मन में एक अलग-सा उल्लास भर गया था। दिल्ली से सिक्किम जाने के दो विकल्प थे- ट्रेन या हवाई जहाज। हमारे समूह ने ट्रेन से जाने का निर्णय लिया। दिल्ली से पहले पश्चिम बंगाल के नई जलपाईगुड़ी और फिर वहां से प्राइवेट कैब लेकर गंगटोक। यह यात्रा काफी दिलचस्प रही। पहाड़, जंगल, संग-संग बहती तीस्ता नदी और छोटे-छोटे गांव, कस्बों को पार करते हुए आखिरकार हम गंगटोक पहुंचे।

गंगटोक ने मोह लिया मन

हिमालय की गोद में बसा गंगटोक एक ऐसा स्थान है, जहां बादल पहाड़ों के साथ अठखेलियां करते हैं, तो नदियां अपनी ही धुन में गीत गाती बहती हैं। यह नजारा किसी जन्नत से कम नहीं लगता। जैसे ही सूरज की किरणें बर्फ से ढंकी चोटियों को चूमती हैं, नीचे हरी-भरी घाटियों पर सुनहरी आभा बिखर जाती है। अपने रंग-बिरंगे बौद्ध मठों, बाजारों और मोहक नजारों से सजा गंगटोक बेमिसाल है। सिक्किम की यह राजधानी दुनिया के कुछ सबसे शानदार बौद्ध मठों का घर है, जिसमें सबसे मशहूर मठ है रुमटेक मठ। गंगटोक से करीब 21 किमी दूर स्थित इस मठ के शांत माहौल में आप रम जाएंगे। इसके अलावा, बीच शहर में स्थित गोनजैंग मठ भी कम मनमोहक नहीं है। शहर के अन्य आकर्षणों में बानझाकरी वॉटरफॉल, ताशी व्यू प्वाइंट, गणेश टोक, हनुमान टोक, गैंगटोक रोप-वे राइड, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क और ऑर्किडेरियम मुख्य हैं।

टेमी टी गार्डन से कंचनगंजा के दीदार

गंगटोक पहुंचने के दूसरे दिन, सुबह नाश्ता करके हम सभी पश्चिम सिक्किम के पेल्लिंग के लिए रवाना हुए, जो करीब 130 किमी. दूर था। हमारा पहला पड़ाव टेमी चाय बागान था। यह सिक्किम का एकमात्र टी गार्डन है, जहां ऑर्गेनिक चाय की पैदावार होती है। घुमावदार रास्तों से जब हमने इस गार्डन में प्रवेश किया, तो वहां की खूबसूरत छटा देखते ही रह गए। मौसम साफ था, तो वहां से कंचनजंगा चोटी के दीदार भी हुए। कुछ समय बिताने के पश्चात हम आगे बढ़े। शाम करीब 4.15 बजे हम पेल्लिंग स्थित अपने होम स्टे पर पहुंच गए। वहां सभी का स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार, स्वागत हुआ। लेकिन तब तक मौसम का रंग बदल चुका था। रिमझिम शुरू हो गई। अगली सुबह भी बारिश थमी नहीं। लेकिन नौ बजते-बजते आसमान साफ होने लगा। हम निकल पड़े पेल्लिंग की ओर।

पश्चिमी सिक्किम का नगीना-पेल्लिंग

पेल्लिंग एक शांत कस्बा है, जो करीब 7,050 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग सरीखा है। हरी-भरी घाटियों, झर-झर गिरते झरनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ यह इलाका सिक्किम के मूल स्वरूप को बेहद खूबसूरती से समेटे हुए है। यहां अकसर कोहरा और बादल छाए रहते हैं, जो इसकी अलौकिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग, बर्ड वॉचिंग करने के अलावा, प्राचीन मठ, गोंपा और स्तूपों से लेकर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं पवित्र खेचेओपालरी झील की सैर कर सकते हैं। हमने कुछ चुनिंदा स्थानों पर जाना तय किया।

पेमायंगत्से मठः 17वीं सदी में स्थापित, सिक्किम के सबसे पुराने मठों में से एक पेमायंगत्से मठ में दुर्लभ कलाकृतियां देखने को मिलेंगे।

खेचेओपालरी झीलः बौद्ध और हिंदू धर्म में पूज्यनीय माने जाने वाले पवित्र खेचेओपालरी झील में एक अलग ही अनुभव होता है। मान्यता है कि मनोकामना पूर्ति करने वाली इस झील के शांत जल को गुरु पद्मसिन और देवी तारा का आशीर्वाद प्राप्त है।

सिडकियोंग बर्ड पार्कः पक्षी प्रेमियों के लिए पेल्लिंग और रबदंत्से के बीच एक खास आकर्षण का स्थल है- सिडकियोंग बर्ड पार्क, जो हिमालयी क्षेत्र में पाए जाने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का घर है।

रिवर ऑरेंज गार्डनः रिंबी नदी के किनारे स्थित इस गार्डन में संतरे के बेशुमार पेड़ लगे हैं। ऑरेंज गार्डन के अंदर एक विलेज होमस्टे, कुछ दुकानें और रेस्टोरेंट भी हैं।

ग्लास स्काईवॉकः ग्लास स्काईवॉक पेल्लिंग के बेहद शानदार अनुभवों में से एक है। देश के इस पहले 'ग्लास स्काईवॉक' के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता, जो समुद्रतल से लगभग 7200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। जब आप इसके पारदर्शी शीशे के फर्श पर कदम रखते हैं, तो हवा में चलने जैसा एहसास होता है। नीचे घाटी को देखते हुए रोमांचक अनुभव होने के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी होती है। लेकिन आस-पास के हरे-भरे नजारे और पूर्वी हिमालय के शानदार दृश्य मन को सुकून देते हैं। स्काईवॉक के समीप ही चार भुजाओं वाले चेनरेजिंग (अवलोकितेश्वर) की 137 फीट ऊंची मूर्ति भी स्थित है।

नामची में चार धाम के दिव्य दर्शन

पेल्लिंग में दो दिन बिताने के उपरांत हमारा अगला डेस्टिनेशन था, सिक्किम के दक्षिण में स्थित नामची। इसे राज्य का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र कहते हैं। यहां हमने 'चार धाम' मंदिर के दर्शन किए। असल में यहां भारत के चार पवित्र मंदिरों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। मंदिर परिसर में भगवान शिव की 108 फुट ऊंची प्रतिमा मुख्य आकर्षण का केंद्र है। समीप में एक भव्य साईं मंदिर भी है।

रावंगला का अलौकिक बुद्ध पार्क

नामची से जब हम रावंगला की ओर बढ़े, तो वहां हमें एक भव्य बुद्ध पार्क के दर्शन हुए, जिसे 'तथागत त्सल' के नाम से भी जाना जाता है। यहां शाक्यमुनि बुद्ध की 130 फुट ऊंची, अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है।

मनमोहक त्सोंगो झील

गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूर (गंगटोक-नाथुला हाइवे), 12,313 फीट की ऊंचाई पर स्थित त्सोंगो झील एक हिमनद झील है, जो अपने शानदार प्राकृतिक नजारों और गहरे सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है। इसकी सतह

का रंग मौसम के अनुसार, बदलता रहता है। जैसे ही हम इसके करीब पहुंचे, वहां का नजारा कल्पना से भी परे था। चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां और हरे-भरे घास के मैदान। यह किसी परी कथा से सीधे निकला हुआ दृश्य लग रहा था। हमने यहां न सिर्फ बर्फ में मस्ती, याक की सवारी की, बल्कि दुनिया के सबसे ऊंचे रोप-वे की रोमांचक यात्रा भी की।

लाचुंग की यादगार यात्रा

हमारा अगला पड़ाव अब सिक्किम का उत्तरी भाग था, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा और अधिक रिमोट क्षेत्र है। गंगटोक से लाचुंग की दूरी करीब 102 किमी. है। सबसे पहले हमें मिला, सेवन सिस्टर्स वॉटरफॉल्स। इस झरने में सात सीढ़ियां या चरण हैं, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। यहां कुछ देर ठहरने के पश्चात हम आगे बढ़े, तो अगला पड़ाव लाचुंग में प्रवेश का चेक प्वाइंट था। लाचुंग में हमने रात में होटल में विश्राम किया और अगले दिन सुबह-सुबह युमथांग घाटी और जीरो प्वाइंट के लिए निकले।

परीलोक जैसा युमथांग घाटी

11,800 फीट से ज्यादा की ऊंचाई पर बसा युमथांग घाटी किसी परीलोक जैसा लगा। अल्पाइन घास के सुंदर मैदान, चारों ओर बर्फ से ढंकी चोटियां, गर्म पानी के झरने और साथ में बहती लाचुंग नदी। इसे फूलों की घाटी भी कहते हैं। यहां खासकर रोडोडेंड्रोन के फूल खिलते हैं, जो वैली को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंगों से रंग देते हैं।

धरती का वंडरलैंड जीरो प्वाइंट

युमथांग घाटी के सर्पीले रास्तों से गुजरते हुए हमारा साक्षात्कार धरती पर एक अलग ही दुनिया से होता है, जिसे 'जीरो प्वाइंट' (या युमेसमडोंग) कहते हैं। उत्तरी सिक्किम में 15,300 फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन सीमा के पास स्थित यह एक सफेद वंडरलैंड है। यहां ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है, तो आपको नीचे से ही पोर्टेबल ऑक्सीजन कैन लेकर आना होता है। जीरो प्वाइंट पर सिर्फ भारतीय सैलानी ही आ सकते हैं। उन्हें सिक्किम टूरिज्म डिपार्टमेंट से प्रोटेक्टेड एरिया परमिट की जरूरत पड़ती है, जो रजिस्टर्ड टूर ऑपरेटर के जरिए एडवांस में लेना होता है। *

कब जाएं : सिक्किम जाने का बेस्ट टाइम है मार्च से मई का महीना। इसके अलावा अक्टूबर से दिसंबर के मध्य तक यहां जा सकते हैं। यूं कहें कि मानसून से पहले यहां कभी भी जा सकते हैं।

कैसे जाएं : आमतौर पर सैलानी पश्चिम बंगाल के बागडोगरा तक हवाई यात्रा करते हैं और वहां से कैब के जरिए गंगटोक जाते हैं। आगे की यात्रा भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त टूर ऑपरेटर के कैब या टैक्सी से करते हैं। बागडोगरा के अलावा, गंगटोक से 35 किमी दूर स्पेशल पाकयोंग एयरपोर्ट भी है। ट्रेन से आप सिलिगुड़ी या न्यू जलपाईगुड़ी तक पहुंच सकते हैं और वहां से कैब से गंगटोक जा सकते हैं।

परफ्यूम-डिओड्रेंट से मिले फ्रेश फील

सीजनल ट्रेंड / विवेक कुमार

गर्मी के मौसम में युवाओं की लाइफस्टाइल में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। उनके ड्रेस कलर हल्के हो जाते हैं। फुटवियर कंफर्टेबल और पसीना सोखने वाले पहनने लगते हैं। स्किन केयर प्रोडक्ट्स की संख्या बढ़ जाती है और इन सब चीजों के साथ ही शामिल हो जाता है डिओड्रेंट और परफ्यूम।

बढ़ा है ट्रेंडः एक जमाना था, जब केवल खास मौकों पर ही परफ्यूम, डिओड्रेंट आदि का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन आज के युवाओं की डेली लाइफस्टाइल के लिए ये जरूरी चीजें बन गई हैं, क्योंकि अब खुशबू केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का भी हिस्सा है। इसलिए कॉलेज से लेकर सोशल गेदरिंग और दफ्तर तक में परफ्यूम, डिओड्रेंट का चलन बहुत बढ़ गया है।

गर्मियों में इसलिए भी है जरूरीः गर्मियों में शरीर से पसीना बहुत निकलता है। इस कारण शरीर में बैक्टीरिया तेजी से सक्रिय होते हैं और शरीर से दुर्गंध आने लगती है। यंगस्टर्स सबसे ज्यादा भागदौड़ करते हैं और बहुत सारे लोगों से मिलते-जुलते हैं। ऐसे में शरीर से अच्छी खुशबू आना और फ्रेश फील करना, जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में डिओड्रेंट और परफ्यूम युवाओं के लिए सबसे जरूरी एसेसरीज बन जाती हैं।

बदल रही है च्वॉइसः फ्रेगरेंस की बात करें तो पहले के जमाने में लोग सिट्रस, एक्वा, मिंट, फ्लोरल नोट्स वाले परफ्यूम इस्तेमाल किया करते थे। जबकि लड़कियां बॉडी मिस्ट और हल्के फ्रूटी परफ्यूम पसंद करती थीं। लेकिन आजकल

स्पोर्टी और मस्क फ्रेगरेंस का चलन बढ़ा है।

बढ़ी है डिमांड-सप्लाईः कुछ दशक पहले के युवाओं के मुकाबले आज के युवाओं की अर्निंग और परचेजिंग पावर बढ़ी है। जो टीनएजर अपने मम्मी-पापा पर पॉकेटमनी के लिए डिपेंड हैं, उनकी पॉकेटमनी भी पहले से काफी ज्यादा बढ़ गई है। इस कारण भी बाजार में परफ्यूम और डिओड्रेंट जैसी एसेसरीज की भरमार हो गई है। अब केवल बड़े ब्रांड ही नहीं बल्कि कई भारतीय स्टार्टअप भी युवाओं को ध्यान में रखकर नए-नए प्रोडक्ट्स लांच कर रहे हैं। मसलन, पॉकेट परफ्यूम, मिनी रोल-ऑन, एल्कोहल फ्री डिओड्रेंट आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। *

सिने ट्रेंड
डी. जे. नंदन

फिल्मों में कितना इफेक्टिव है स्पीड-एडवेंचर का जादू

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी जी रहे लोग, खासकर यंगस्टर्स, मनोरंजन के लिए देखी जाने वाली फिल्मों में भी 'स्पीड' यानी तेजी से भागती कहानी पसंद करते हैं। हालांकि कई फिल्में इसकी अपवाद भी रही हैं। फिल्मों में स्पीड और एडवेंचर के सक्सेस से रिलेशन पर एक नजर।

आज का दर्शक ठहराव नहीं, स्पीड चाहता है।' यह धारणा इन दिनों फिल्म जगत में किसी सूत्रवाक्य की तरह हर तरफ गूंज रही है। कहा जा रहा है कि मोबाइल स्क्रीन, रील कल्चर और लगातार बदलती डिजिटल दुनिया ने युवाओं को इतना धैर्यहीन बना दिया है कि अब वह उन्हीं फिल्मों को देख सकते हैं या देखते हैं, जो शुरुआती 10 मिनटों में ही दर्शकों को खुद से जोड़ ले। हर कुछ देर में चौकाएं और कहानी में बिना कोई ठहराव आए, वह लगातार आगे बढ़ती रहे। इसके लिए फिल्मों में तेज एडिटिंग, छोटे दृश्य, लगातार ट्विस्ट और ऊंची भावनात्मक उत्तेजना का चलन बढ़ा है। कुल मिलाकर यह 'हाई इंगेजिंग' ड्रामा का दौर है।

दर्शकों को चाहिए अटैचमेंट हुकः इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का युवा दर्शक शुरू से ही फिल्मों में 'अटैचमेंट हुक' चाहता है। उसमें यह आदत हाल के सालों में विकसित हुई रील कल्चर और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ही लगाई है, क्योंकि आज के युवा आमतौर पर दिन के तीन से चार घंटे, छोटे वीडियो और तेज रफ्तार सूचनाओं के घेरे में रहते हैं। लगातार बदलती विजुअल एक्साइटमेंट के बीच रहने के कारण उनके स्वभाव में तेजी को लेकर पसंदगी बढ़ी है। बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में भी कुछ इस तरह से हाइप बन गई है कि अगर कहानी देर तक एक ही वातावरण में टिकी रही तो दर्शकों, विशेषकर युवाओं का ध्यान उचट जाएगा और वो फिल्म को नकारा देंगे।

इन फिल्मों ने सेट किया नया ट्रेंडः अब बॉलीवुड ट्रेंड के जानकारों और फिल्म मेकर्स के लिए सफलता का अलिखित सिद्धांत बन चुका है कि युवा दर्शकों को फिल्मों में शुरू से ही बांधकर रखो। किसी बड़े हादसे के जरिए, किसी उलझाऊ रहस्य के जरिए या अंधाधुंध हिंसा अथवा विस्फोट के जरिए। बहरहाल, यह राय बनाने या यूं कहें कि यह ट्रेंड सेट करने में हाल के वर्षों में आई 'जवान' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों की बड़ी भूमिका है। क्योंकि इन फिल्मों में तेज रफ्तारी का सिद्धांत ही सबसे ज्यादा मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इन फिल्मों की सफलता और फिर हाल में आई 'धुरंधर-1', 'धुरंधर-2', की सफलता ने ही तेज रफ्तार वाली फिल्मों के लिए माहौल बनाया है। ट्विस्ट और टर्न्स से भरी इन इन सभी फिल्मों में बड़ी तेजी से थोड़ी-थोड़ी देर में दृश्य बदलते हैं।

इमोशनल इंगेजिंग फिल्में भी हुईं सफलः फिल्मों की स्पीड को लेकर सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच आज का युवा दर्शक सिर्फ तेज रफ्तार फिल्मों का दीवाना है? अगर ऐसा ही होता तो भला '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी धीमी रफ्तार वाली फिल्मों को युवाओं ने इतना क्यों पसंद किया? दरअसल, बहस सिर्फ स्पीड की नहीं इंगेजमेंट की है। आज का युवा दर्शक वाकई कहानी में अनावश्यक खिंचाव नहीं चाहता, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह भावनात्मक गहराई को समझता नहीं या उसे पसंद नहीं करता। जब भी ऐसी फिल्में आती हैं, जिनमें भावनात्मक गहराई मौजूद होती है, तो फिर वह उन्हें निश्चित रूप से पसंद करता है। '12वीं फेल' और 'लापता लेडीज' जैसी फिल्मों का कथानक भी महानगरों से दूर ग्रामीण परिवेश का था, फिर भी ये दोनों फिल्में खासकर युवा दर्शकों द्वारा खूब पसंद की गईं, तो इसका मतलब यह है कि युवा दर्शक सिर्फ तेज स्पीड और हाई इंगेजिंग फिल्मों को ही पसंद नहीं करते बल्कि उन सभी फिल्मों को पसंद करता है, जो उनकी भावनाओं को स्पर्श करती हैं। आज के युवा दर्शक अच्छी कहानी पसंद करते हैं, चाहे वह तेज हो या फिर चाहे धीमी ही क्यों न हो।

पुरानी फिल्मों में नहीं था स्पीड का प्रेशरः पुराने जमाने की फिल्मों के पात्र आपस में देर तक बातचीत करते थे। खामोशी होती थी, तो वह भी कई बार इतनी लंबी होती थी कि दर्शक खुद खामोशी महसूस करने लगता था। इस तरह अगर इस स्पीड के पैमाने पर पुरानी फिल्मों को कसें तो कोई फिल्म ही नहीं हिट होनी चाहिए थी। लेकिन हम जानते हैं कि फिल्मों की सफलता की दर आज के मुकाबले पहले कहीं ज्यादा थी। यह अलग बात है कि आज के मुकाबले फिल्मों की कमाई बहुत कम थी। वास्तव में पेस (स्पीड) इन दिनों सच्चाई से कहीं ज्यादा एक फैशन की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, जबकि सच यह है कि आज के दर्शक भी गहरे और इंटेंस कम रफ्तार के दृश्य भी खूब पसंद करते हैं।

स्पीड के अलावा भी हैं कई फैक्टर्सः आज का युवा दर्शक सिर्फ धीमेपन से बोर नहीं होता बल्कि बेसिर पैर के फिल्म के खिंचाव, बिना किसी वजह फिल्म को वल्गर बनाने की कोशिश और जबर्दस्ती फिल्मों में ठूंस दिए गए आइटम सॉन्ग जैसे एक्सपेरिमेंट्स से चिढ़ता है। उसे ऐसी फिल्में वाकई ज्यादा पसंद नहीं आतीं, जिनमें जानबूझकर लॉजिक की ऐसी-तैसी की गई हो। आज का दर्शक फिल्म के हर फ्रेम में चाहे वह जिस तरह की भावना का हो, इसमें हाई इंटेंसिटी की तलाश करता है। कुल मिलाकर कहने का मतलब यह है कि सवाल रफ्तार का नहीं, निरंतरता का है। अगर फिल्में दर्शक को लगातार मानसिक और भावनात्मक तरीके से जोड़े रखती हैं, तो वह धीमी होकर भी प्रभावशाली हो सकती हैं, यह कोई ब्रह्म वाक्य नहीं है कि आज का दर्शक स्पीड और हाई इंगेजिंग ट्विस्ट वाली फिल्में ही देखना चाहते हैं। वे केवल एंटरटेनमेंट चाहते हैं। *

रोचक
शिखर चंद जैन

इन दिनों फ्रूट मार्केट में तरह-तरह के आम खूब मिल रहे हैं। इनका स्वाद तो लाजवाब होता ही है, इनसे जुड़े अतीत के कुछ किस्से भी बड़े दिलचस्प हैं।

आम से जुड़े ये किस्से हैं बेहद खास

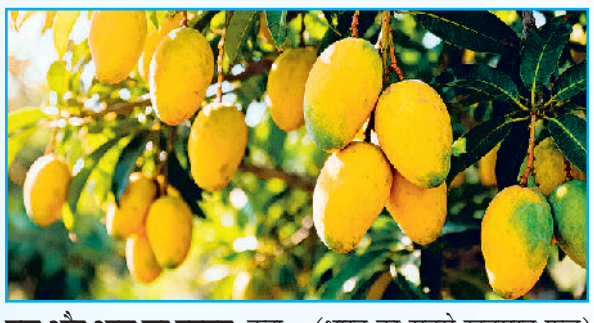

भारत में आम केवल एक फल नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य इतिहास और राजनीति का एक अहम हिस्सा रहा है। सम्राटों से लेकर राजनेताओं और साहित्यकारों तक, आम की मिठास ने कई किस्सों को जन्म दिया है। हिंदी साहित्य में 'आम' न केवल फलों का राजा होने के कारण प्रसिद्ध है, बल्कि यह वसंत ऋतु, प्रेम, मादकता और कामदेव के प्रतीकों के रूप में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता और निबंधों तक, आम का बौर, उसकी खुशबू और मिठास कवियों और लेखकों की कल्पना का अभिन्न हिस्सा रही है। आम से जुड़े कुछ रोचक किस्से हैं, जो आज भी रस ले-लेकर सुने-सुनाए जाते हैं।

आम्रपाली और आम्रपाली आम का रिश्ताः बिहार की प्रसिद्ध नृत्यांगना और वैशाली की गणिका आम्रपाली, आम के पेड़ के नीचे शिशु रूप में मिली थी, इसलिए उसका नाम 'आम्रपाली' (आम के पत्ते) रखा गया। आम की एक लोकप्रिय किस्म 'आम्रपाली' का नामकरण उसी के नाम पर किया गया है।

बुद्ध और आम का उपवनः कहा जाता है कि आम्रपाली ने भगवान बुद्ध को अपने आम के बाग (आम्रवन) में आमंत्रित किया था और उन्हें वह बाग दान कर दिया था। आम्रपाली बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गईं।

अमीर खुसरो का आम पर शेरः 13वीं सदी के महान कवि अमीर खुसरो ने फारसी में आम की प्रशंसा में कविताएं लिखी थीं। खुसरो ने आम को 'नगजा तरीन मेवाह हिंद' (भारत का सबसे खूबसूरत फल) कहा था।

अलाउद्दीन खिलजी की शाही दावत में आमः दिल्ली के सुल्तान रहे अलाउद्दीन खिलजी आम के दीवाने थे। कहा जाता है कि उन्होंने दिल्ली के 'कुश-ए-फिरोजी' में आम की कई किस्मों की एक शानदार दावत दी थी, जिसमें उन्होंने आम के साथ संगीत का शानदार कार्यक्रम आयोजित करवाया था।

आम का दीवाना बाबरः मुगल वंश के संस्थापक बाबर को आम इतना पसंद था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में आम का जिक्र किया है। कहा जाता है कि वह भारत में आम का स्वाद चखकर चकित रह गया था, क्योंकि यह फल मध्य एशिया के देशों में नहीं मिलता था।

अकबर का आम प्रेम और लाख बागः मुगल बादशाह अकबर आम का इतना शौकीन था कि उसने बिहार के दरभंगा में 1 लाख से अधिक आम के पेड़ों का बाग लगवाया था, जिसे 'लाखी बाग' कहा जाता था। उसने आम की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित करने में सहायता दी थी।

मिर्जा गालिब की आम-दीवानगीः मशहूर शायर मिर्जा गालिब आम के बड़े दीवाने थे। वे कहते थे कि 'आम में बस दो ही खूबियां होनी चाहिए-वे मीठे हों और बहुत सारे हों।' एक किस्से के अनुसार, जब उनके दोस्त ने आम को नापसंद किया, तो गालिब ने नाराज होकर कहा था, 'गधे भी आम नहीं खाते।' *

भारत में हुई आम की उत्पत्तिः माना जाता है कि आम की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में हुई, जहां 4000 वर्ष ईसा पूर्व हिंदू ग्रंथों में इस फल का उल्लेख मिलता है। बौद्ध भिक्षु भी इस फल की खेती करते थे। प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं और बाद में व्यापारियों तथा विदेशी यात्रियों के माध्यम से आम दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और अंततः दक्षिण अमेरिका तक पहुंचा।